रुचिरा

तृतीयो भागः

अष्टमवर्षाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

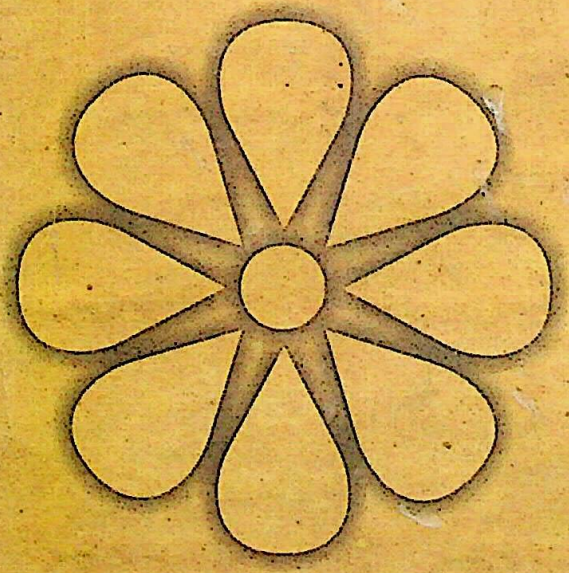

हमारा राष्ट्र-ध्वज

भारत का राष्ट्र-ध्वज यहाँ की धरती और लोगों का प्रतीक है। यह तीन रंग की समान चौड़ाई की आयताकार पट्टियों से बना है। सबसे ऊपरी पट्टी केसरिया और निचली हरे रंग की है। बीच की पट्टी श्वेत रंग की है जिसके केंद्र में गहरे नीले रंग का अशोक चक्र बना है। इसमें समान दूरी पर स्थित 24 तीलियाँ बनी हैं। यह अशोक चक्र श्वेत पट्टी पर दोनों तरफ दिखता है। पूरा ध्वज आयताकार है जिसमें लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है।

संविधान सभा में राष्ट्र-ध्वज के बारे में डॉ. राधाकृष्णन ने बताया था कि "भगवा या केसरिया रंग त्याग और नि:स्वार्थता का प्रतीक है। श्वेत रंग प्रकाश और सत्य के पथ का जो हमारे आचरण को निर्देशित करता है। हरा, धरती और पेड़-पौधों के साथ हमारे संबंध को व्यक्त करता है, जिस पर सभी जीवन संबंध आश्रित हैं। अशोक चक्र धर्म के नियम का चक्र है। सत्य और धर्म उनका नियंत्रक सिद्धांत है जो इस ध्वज के नीचे काम करते हैं। फिर चक्र गति का प्रतीक भी है। गति में जीवन है। भारत को गतिमान रहना और आगे बढ़ना है।"

यदि इसे समुचित रूप से किया जाए तो सामान्य लोगों, निजी संस्थाओं और शिक्षा संस्थानों द्वारा राष्ट्र-ध्वज फहराने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। ध्वज की मर्यादा और सम्मान के अनुकूल, जो भारतीय राष्ट्र-ध्वज संहिता में विस्तार से लिखा हुआ है, कोई भी राष्ट्रीय-ध्वज सभी दिन, समारोह या अन्य अवसरों पर फहरा सकता है।

जहाँ किसी सार्वजनिक भवन पर ध्वज फहराने का चलन है, इसे रविवार और छुट्टियों के दिन भी फहराया जाता है। किंतु कोई भी मौसम हो, सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही, जैसा ध्वज संहिता में निर्दिष्ट है। उस भवन पर किसी अत्यंत विशिष्ट अवसर पर रात में भी ध्वज फहराए रखा जा सकता है। राजकीय/सैनिक/अर्द्ध-सैनिक अंतिम संस्कारों के अतिरिक्त किसी अवसर पर राष्ट्रीय-ध्वज को कुछ लपेटने के कार्य में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। उन अवसरों पर भी ध्वज को चिता या कब्र में नहीं डाला जाता। ध्वज को किसी गाड़ी या नाव के ऊपर, बगलों में या पीछे लपेटा नहीं जा सकता। इसे इस तरह नहीं रखा जाता जिसमें यह गंदा हो या फट जाए। यदि ध्वज फट गया हो तो इसे जैसे-तैसे फेंक नहीं दिया जाता बल्कि सम्मानपूर्वक, एकांत में प्राय: जलाकर नष्ट किया जाता है। यद्यपि राष्ट्र-ध्वज का पोशाक या पहनावे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, किंतु कमर से नीचे या अधोवस्त्र के रूप में नहीं। इसे तौलिए या तकिए पर कढ़ाई, छपाई के रूप में प्रयोग करना वर्जित है। ध्वज के ऊपर कुछ लिखना भी मना है। इसे किसी तरह के विज्ञापन में भी उपयोग नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय-ध्वज का निरादर करना दंडनीय अपराध है।

राष्ट्र-ध्वज को एक ही स्तंभ पर दूसरे ध्वज के साथ नहीं फहराया जा सकता। प्रत्येक ध्वज के लिए अलग-अलग ध्वज-स्तंभ होने चाहिए। जब कोई विदेशी महानुभाव सरकार द्वारा प्रदत्त कार में चलते हैं तो कार में आगे दाहिनी ओर अपने देश का राष्ट्र-ध्वज रहता है और अन्य देश का ध्वज बाईं ओर।

देश के राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री का निधन होने पर पूरे देश में राष्ट्र-ध्वज आधा झुका दिया जाता है।

पिछले पाँच दशक से भी अधिक समय से हमारे असंख्य सैनिकों और नागरिकों ने अपना बलिदान दिया है ताकि हमारा तिरंगा शान से फहराता रह सके। हमें अपने राष्ट्र-ध्वज को प्रणाम करना और उससे प्रेम रखना चाहिए।

2.1

रुचिरा

तृतीयो भागः

अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-810-2

प्रथम संस्करण
जनवरी 2008 माघ 1929
पुनर्मुद्रण
जनवरी 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932

PD 220T MK

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा होली फेथ इंटरनेशनल (प्रा.) लिमिटेड, बी-9 और 10, साईट-IV, साहिबाबाद (उ.प्र.) से मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*नीरजा शुक्ला*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*अब्दुल नईम*
सहायक संपादक	:	*एम. लाल*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
दुर्गा बाई व्याम

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रियं-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां

प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठि-महाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नयी दिल्ली
20 नवम्बर 2007

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी, *सहायक निदेशक*, सीमैट, एस.सी.ई.आर.टी, पटना, बिहार।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता संस्कृत*, सेन्ट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली-31

नारायण दाश, *प्रवक्ता संस्कृत*, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेन्द्रपुर, कोलकाता।

संगीता गुंदेचा, *प्रवक्ता संस्कृत*, तुलनात्मक भाषा तथा संस्कृति विभाग, बरकतउला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* संस्कृत, रा. व. मा. बा. विद्यालय नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

टीकाराम त्रिपाठी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

कमलेश महता, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय, महिपालपुर, दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर उमाशंकर शर्मा ऋषि, सेवानिवृत, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना एवं डॉ. अष्टभुजा शुक्ल, प्रवक्ता संस्कृत, संस्कृत महाविद्यालय, चित्राखोर, बरहुआ, वस्ती, उत्तर प्रदेश की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासम्भव योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर रामकरण शर्मा, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परशराम कौशिक, *प्रभारी,* कम्प्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; दुर्गा देवी, *प्रूफ़ रीडर* एवं कमलेश आर्य, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भाषा में प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, कला, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति होती रही है। भारतवर्ष का विशाल भूभाग विविधताओं से भरा हुआ है। इसमें भावनात्मक एकता की सदा प्रवाहित होने वाली धारा संस्कृत के माध्यम से जानी जा सकती है। विविध भारतीय भाषाओं पर भी संस्कृत के व्याकरण तथा वाक्य-रचना का प्रभाव परिलक्षित होता है। परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व आदि में निहित साहित्य का नैतिक महत्त्व आज पूर्व की अपेक्षा अत्यधिक माना जाता है। इन सबके विकास के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। आधुनिक संस्कृत रचनाएँ समाज के उपेक्षित समुदाय के प्रति भी उदारतापूर्वक मुखर हैं। इससे संस्कृत का महत्त्व वस्तुतः बढ़ गया है।

सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर तथा सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकास किया गया है। इसमें अध्येताओं को जागरूक बनाने वाली तथा यथार्थ जीवन से संबद्ध रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो देगी ही साथ ही संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रति उनमें अपेक्षित अभिरुचि भी उत्पन्न करने में समर्थ होगी, ऐसा विश्वास है।

इसी शृङ्खला का तृतीय पुष्प **रुचिरा तृतीयो भागः** छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत हैं। इसके निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों

की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी सरल संस्कृत वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित कर सकें।

रुचिरा के इस भाग में कुल 15 पाठ हैं जिनमें छह पद्यात्मक तथा तीन संवादात्मक या नाट्यरूप हैं। शेष पाठ कथात्मक या निबन्धात्मक हैं। पद्यात्मक पाठों में *सुभाषितानि* नैतिक मूल्यों से युक्त प्राचीन कवियों की सुन्दर उक्तियों का संकलन है। सभी पद्य गेय हैं। *अशोकवनिका* शीर्षक पाठ वाल्मीकिरचित रामायण के सुन्दरकाण्ड से संकलित है जिसमें लङ्का में स्थित अशोकवनिका के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन है। *हिमालयः* क़ालिदास के कुमारसम्भवम् महाकाव्य से संकलित है जो पर्वतराज हिमालय के नैसर्गिक सौन्दर्य का वर्णन है। प्रहेलिका में प्राचीन काल से प्रचलित संस्कृत पहेलियों का संकलन है। इन प्राचीन संस्कृत पद्य-रचनाओं के अतिरिक्त दो आधुनिक संस्कृत गीत भी इस पाठ में संकलित हैं। संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। *सदैव पुरतो निधेहि चरणम्* स्व. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित उद्बोधन-कविता के रूप में है। जलवाहिनी एक लोकगीत का संस्कृत गीति-रूपान्तर है।

संवादात्मक पाठों में *भगवदज्जुकम्* बोधायन-रचित संस्कृत-प्रहसन से संकलित पाठ है जिसमें परकायप्रवेश का विचित्र और रोचक कथानक है। *सप्तभगिन्यः* उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्यों के सांस्कृतिक महत्व दिखानेवाला पाठ है। इसी प्रकार *कः रक्षति कः रक्षितः* में संवाद के द्वारा आधुनिक जीवन में बढ़ते जा रहे प्लास्टिक पदार्थों के उपयोग के कारण उत्पन्न होनेवाली पर्यावरणीय समस्याओं पर दृष्टि डाली गई है।

गद्यात्मक पाठों में *बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता* विष्णुशर्मा द्वारा रचित प्रसिद्ध नीतिकथा पञ्चतन्त्र से संकलित है जिसमें शृगाल तथा मूर्ख सिंह की कथा दी गई है। *धर्मे धमनं पापे पुण्यम्* पाठ एक लोककथा का संस्कृत में आधुनिक रूपान्तरण है जिसमें लोककथा के 'कौतुक के निर्वाह के साथ प्रत्युत्पन्नमतित्व का रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। *प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा* गुजराती के प्रसिद्ध कथाकार एवं शिक्षाविद् गिजूभाई की एक गुजराती कहानी का संस्कृत रूपान्तर है।

इसमें तीन कथात्मक गद्य-पाठों के अतिरिक्त तीन नवनिर्मित निबन्ध भी हैं, जिनमें *संसारसागरस्य नायकाः* जल प्रबंधन के पारंपरिक ज्ञान से जुड़े उन वास्तुकारों के विषय में भावप्रवण परिचय देता है जिन्हें राजस्थान में गजधर कहा जाता था। *सावित्री बाई फुले* पाठ में, महाराष्ट्र में स्त्री-शिक्षा के तथा दलित चेतना के प्रसार कार्यों में अग्रणी एक प्रसिद्ध महिला की जीवनी दी गयी है। अन्तिम निबन्ध प्राचीन भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक *आर्यभट* के वैज्ञानिकचिन्तन को प्रकाशित करता है। इसे आर्यभट शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार पाठों का चयन नयी दृष्टि से संस्कृत के व्यापक रूप को प्रतिनिधित्व देते हुए किया गया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में पाठ-परिचय देते हुए उसके अन्त में शब्दार्थ, अभ्यास-प्रश्न तथा योग्यता-विस्तार के द्वारा विद्यार्थियों के बुद्धि-विकास एवं भाषा-संरचनात्मक ज्ञान की प्रगति पर ध्यान रखा गया है।

संक्षेप में **रुचिरा तृतीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है:

- संस्कृत भाषा और साहित्य की समकालीन सन्दर्भों में पहचान
- अभी तक पाठ्य-पुस्तकों में उपेक्षित विषयों को रेखांकित करना
- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त सुभाषित-पद्यों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक प्राचीन और आधुनिक कथाओं के द्वारा कल्पना-शीलता का विकास

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में शिक्षक की मध्यस्थता तो आवश्यक होती ही है, उसे अत्यधिक सुरुचिपूर्ण, सहज और ग्राह्य बनाने में भी उसकी सक्रिय भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अध्यापन की सफलता के लिए एक ओर तकनीकी शैली से

निर्मित पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन-शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए आवश्यकता के अनुसार दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका अभिनय भी विद्यार्थियों से कराया जा सकता है।

इस संकलन को यद्यपि विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूरा प्रयास किया गया है तथापि इसे विद्यार्थियों के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के बहुमूल्य एवं सार्थक सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

पाठानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
	पुरोवाक्	*iii*
	भूमिका	*vii*
	मङ्गलम्	*xii*
प्रथमः पाठः	सुभाषितानि	1
द्वितीयः पाठः	बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता	6
तृतीयः पाठः	भगवदज्जुकम्	13
चतुर्थः पाठः	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्	23
पञ्चमः पाठः	धर्मे धमनं पापे पुण्यम्	29
षष्ठः पाठः	प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा	37
सप्तमः पाठः	जलवाहिनी	43
अष्टमः पाठः	संसारसागरस्य नायकाः	50
नवमः पाठः	सप्तभगिन्यः	59
दशमः पाठः	अशोकवनिका	68
एकादशः पाठः	सावित्री बाई फुले	74
द्वादशः पाठः	कः रक्षति कः रक्षितः	80
त्रयोदशः पाठः	हिमालयः	88
चतुर्दशः पाठः	आर्यभटः	94
पञ्चदशः पाठः	प्रहेलिकाः	102
परिशिष्टम्	सन्धिः, कारकम्, शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च	107

मङ्गलम्

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥1॥

-शुक्लयजुर्वेदः(34.1)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या-
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥2॥

-शुक्लयजुर्वेदः(34.6)

रूपान्तरम्

जो रहता है जाग्रत और दूर दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥1॥

जो जन जन को बागडोर से इधर उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥2॥

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि

['सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह *सुभाषित* का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारोत्तेजक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।]

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ।।1।।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुःपुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।।2।।

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ।।3।।

पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं
माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां
श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति ।।4।।

महतां प्रकृतिः सैव वर्धितानां परैरपि।
न जहाति निजं भावं संख्यासु लाकृतिर्यथा ।।5।।

स्त्रियां रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ।।6।।

गुणज्ञेषु	–	गुणियों में
सुस्वादुतोयाः	–	स्वादिष्ट जल
प्रभवन्ति	–	निकलती हैं/उत्पन्न होती हैं
समुद्रमासाद्य (समुद्रम्+आसाद्य)	–	समुद्र में मिलकर/पहुँचकर
भवन्त्यपेयाः (भवन्ति+अपेयाः)	–	पीने योग्य नहीं होती
विषाणहीनः	–	सींग के बिना
खादन्नपि (खादन्+अपि)	–	खाते हुए भी
जीवमानः	–	जिन्दा रहता हुआ
पिशुनस्य	–	चुगलखोर/चुगली करने वाले की
व्यसनिनः	–	बुरी लत वालों की
नराधिपस्य (नर+अधिपस्य)	–	राजा का/के/की

जनयेन्मधुमक्षिकासौ (जनयेत्+मधुमक्षिका+असौ)	–	यह मधुमक्खी पैदा करती/ निर्माण करती है
सन्तस्तथैव (सन्तः+तथा+एव)	–	वैसे ही सज्जन
सृजन्ति	–	निर्माण करते हैं
प्रकृतिः	–	स्वभाव/आदत
वर्धितानाम्	–	बढ़ाये गए/प्रशंसित
परैरपि (परैः+अपि)	–	दूसरों से भी/परायों से भी
जहाति	–	छोड़ता है
लाकृतिर्यथा (लृ+आकृतिः+यथा)	–	जैसे नौ का आकार/स्वभाव
रोचमानायाम्	–	अच्छी लगने पर

अभ्यासः

1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।

2. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

   (क) समुद्रमासाद्य ..... ।

   (ख) ..... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।

   (ग) तद्भागधेयं ..... पशूनाम्।

   (घ) विद्याफलं ..... कृपणस्य सौख्यम्।

   (ङ) स्त्रियां ..... सर्वं तद् ..... कुलम्।

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

   (क) व्यसनिनः किं नश्यति?

   (ख) कस्यां रोचमानायां सर्वं कुलं रोचते?

(ग) कस्य यशः नश्यति?

(घ) मधुमक्षिका किं जनयति?

(ङ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति?

4. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-

यथा- कंजूस कृपणः

कड़वा .....

पूँछ .....

लोभी .....

मधुमक्खी .....

तिनका .....

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत-

वाक्यानि	कर्त्ता	क्रिया
यथा-सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।	सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	.....	.....
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	.....	.....
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	.....	.....
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	.....	.....
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	.....	.....

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।

(ख) नद्यः सुस्वादुतोयाः भवन्ति।

(ग) लुब्धस्य यशः नश्यति।

(घ) मधुमक्षिका माधुर्यमेव जनयति।

(ङ) महतां प्रकृतिः सुस्थिरा भवति।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत-

यथा-समुद्रमासाद्य	–	समुद्रम्	+	आसाद्य
माधुर्यमेव	–	.....	+	.....
अल्पमेव	–	.....	+	.....
सर्वमेव	–	.....	+	.....
समानमपि	–	.....	+	.....
महात्मनामुक्तिः	–	.....	+	.....

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

(ग) प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा संस्कृत एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'–इस पंक्ति में विसर्ग सन्धि के नियम में 'गुणाः' के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। सन्धि के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' होगी।

द्वितीयः पाठः

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

[प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रम्' के तृतीय तन्त्र 'काकोलूकीयम्' से संकलित है। पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णुशर्मा हैं। इसमें पाँच खण्ड हैं जिन्हें 'तन्त्र' कहा गया है। इनमें गद्य-पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मुख्यतः पशु-पक्षी हैं।]

अव्ययप्रयोगः

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्-"नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि" इति।

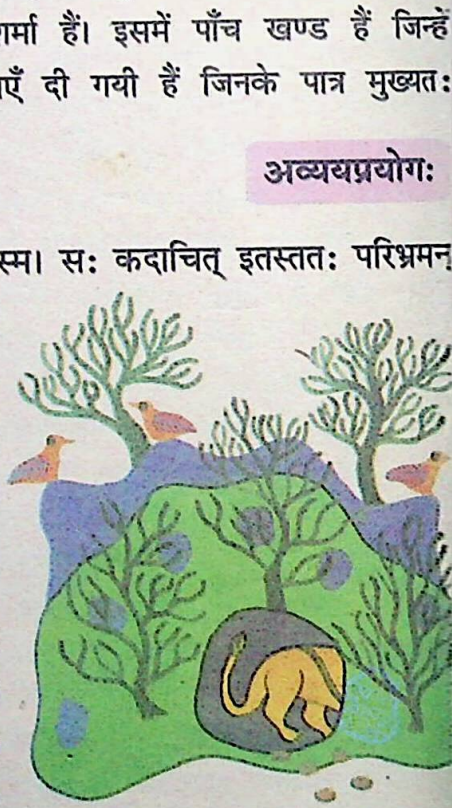

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगालः अचिन्तयत्-"अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि?" एवं विचिन्त्य

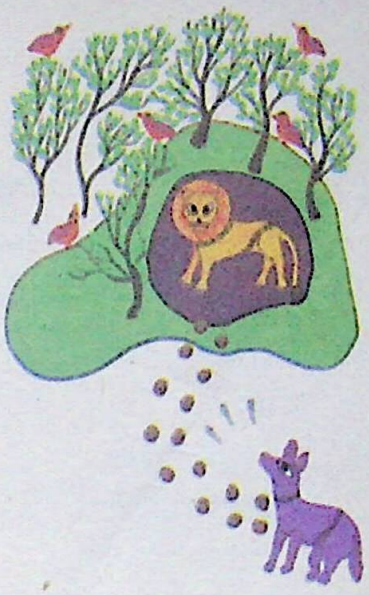

दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः-"भो बिल! भो बिल! किं न स्मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति।"

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्-"नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति।"

अथवा साध्विदम् उच्यते-

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्।।

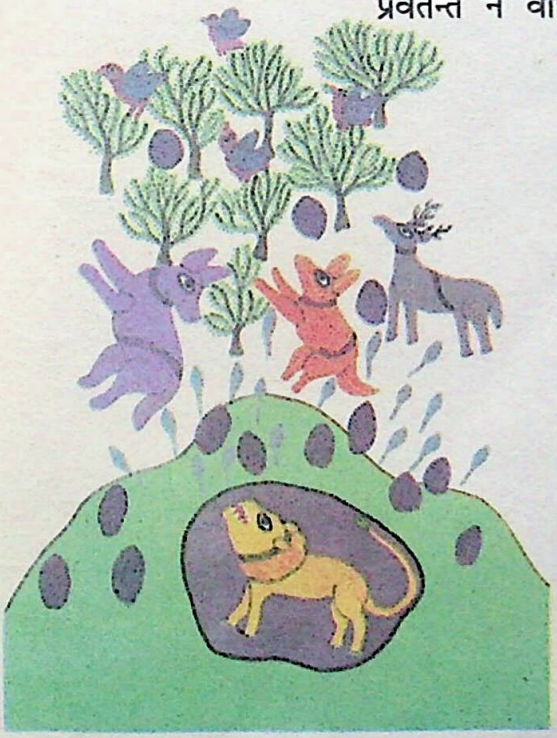

तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत्-

अनागतं यः कुरुते स शोभते
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता।।

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

कस्मिंश्चित् (कस्मिन्+चित्)	–	किसी (वन में)
क्षुधार्तः (क्षुधा+आर्तः)	–	भूख से व्याकुल
अन्तरे	–	बीच में
निगूढो भूत्वा	–	छिपकर
सिंहपदपद्धतिः	–	शेर के पैरों के चिह्न
रवः	–	शब्द/आवाज
यावत्-तावत्	–	जबतक, तबतक
समयः	–	शर्त
बाह्यतः	–	बाहर से
यदि-तर्हि	–	अगर, तो
तच्छ्रुत्वा (तत्+श्रुत्वा)	–	वह सुनकर
भयसन्त्रस्तमनसाम्	–	डरे हुए मन वालों का
हस्तपादादिकाः (हस्तपाद+आदिकाः)	–	हाथ-पैर आदि से सम्बन्धित
वेपथुः	–	कम्पन
भोज्यम्	–	भोजन योग्य (पदार्थ)
सहसा	–	एकाएक
अनागतम्	–	आने वाले (दुःख) को
शोच्यते	–	चिन्तनीय होता है
संस्थस्य	–	रहते हुए का/के/की
जरा	–	बुढ़ापा
कुरुते/करोति	–	(निराकरण) करता है
बिलस्य	–	बिल का (गुफा का)

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत-

कस्मिंश्चित्	विचिन्त्य	साध्विदम्
क्षुधार्तः	एतच्छ्रुत्वा	भयसन्त्रस्तमनसाम्
सिंहपदपद्धतिः	समाह्वानम्	प्रतिध्वनिः

2. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) सिंहस्य नाम किम्?

(ख) गुहायाः स्वामी कः आसीत्?

(ग) सिंहः कस्मिन् समये गुहायाः समीपे आगतः?

(घ) हस्तपादादिकाः क्रियाः केषां न प्रवर्तन्ते?

(ङ) गुहा केन प्रतिध्वनिता?

3. मञ्जूषातः अव्ययपदं चित्वा वाक्यानि पूरयत-

सदा	बहिः	दूरं	तावत्	तर्हि	तदा

(क) यदा दशवादनं भवति ..... छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।

(ख) सूर्यः पूर्वदिशायां ..... उदेति।

(ग) शृगालः गुहायाः ..... आसीत्।

(घ) स च यावत् पश्यति, ... सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्ट

(ङ) शृगालोऽपि ततः ..... पलायमानः अपठत्।

(च) यदि सफलताम् इच्छसि ..... आल

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

4. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) खरनखरः कुत्र प्रतिवसति स्म?

(ख) महतीं गुहां दृष्ट्वा सिंहः किम् अचिन्तयत्?

(ग) शृगालः किम् अचिन्तयत्?

(घ) शृगालः कुत्र पलायितः?

(ङ) किं विचार्य सिंहः शृगालस्य आह्वानमकरोत्?

(च) अस्यां कथायां कस्य चातुर्यं निरूपितं सिंहस्य शृगालस्य वा?

5. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

सहसा	दूरे	क्रमशः	यदा	तदा	परन्तु	यदि	तर्हि

एकस्मिन् वने कश्चन व्याधः जालं विस्तीर्य ..... स्थितः। .....

आकाशे सपरिवारः कपोतराजः चित्रग्रीवः निर्गतः।

..... तण्डुलकणानामुपरि कपोतानां लोभो जातः।

..... राजा तत्र सहमतः नासीत्। तस्य युक्तिः

आसीत् ..... निर्जने वने कोऽपि मनुष्यो नास्ति

..... कुतो वा तण्डुलकणानां सम्भवः?

..... राज्ञः उपदेशमस्वीकृत्य ते नीचैः आगता,

..... जाले निपतिताः। अतः उक्तम् '.....

विदधीत न क्रियाम्'।

6. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत-

(क) गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्।

(ख) सिंहः एकां महतीं गुहाम् अपश्यत्।

(ग) परिभ्रमन् सिंहः क्षुधार्तो जातः।

(घ) दूरस्थः शृगालः रवं कर्त्तुमारब्धः।

(ङ) सिंहः शृगालस्य आह्वानमकरोत्।

(च) दूरं पलायमानः शृगालः श्लोकमपठत्।

(छ) गुहायां कोऽपि अस्ति इति शृगालस्य विचारः।

योग्यता-विस्तारः

ग्रन्थ-परिचय - विष्णुशर्मा ने राजा अमरशक्ति के मूर्ख पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के उद्देश्य से कथाओं के संकलन के रूप में पञ्चतन्त्र की रचना की थी। इसमें मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षित-कारक; इन पाँच खण्डों में कुल 70 कथाएँ तथा 900 श्लोक हैं। श्लोकों में प्रायः तर्कपूर्ण नीतिश्लोक प्रयुक्त हैं। पञ्चतन्त्र का अनुवाद चतुर्थ शताब्दी के आसपास ईरान की पहलवी भाषा में हुआ था। इसी के आधार पर विदेशी भाषाओं में इसके अनेक अनुवाद हुए।

'काकोलूकीयम्' पञ्चतन्त्र का तृतीय तन्त्र है। इसका नाम काक और उलूक की मुख्य कथा के कारण पड़ा है।

व्याकरणम्

अव्यय - संस्कृत में दो प्रकार के शब्द हैं-विकारी तथा अविकारी। विकारी शब्द परिवर्तनशील हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी हैं। जैसे-बालकः, सः, शुक्लः, गच्छति। अविकारी शब्द अव्यय कहलाते हैं। इनके रूप कभी नहीं बदलते। जैसे-अत्र, अधुना, अपि।

अव्ययों के भी रूढ और यौगिक दो रूप मिलते हैं। रूढ अव्ययों के खण्ड नहीं होते जैसे-च, अपि, वा, तु, खलु, न इत्यादि। यौगिक अव्ययों के खण्ड होते हैं ये कृत्, तद्धित या समास के रूप में होते हैं। कृत् से बने अव्यय हैं-गत्वा, गन्तुम् इत्यादि। तद्धित से बने अव्यय हैं-सर्वथा, एकदा, तत्र, इत्थम्, कथम् इत्यादि। समास के रूप में अव्यय हैं-प्रतिदिनम्, यथाशक्ति इत्यादि।

प्रस्तुत पाठ में कदाचित्, इतस्ततः (इतः + ततः), न, दृष्ट्वा, नूनम्, अपि, तर्हि, अत्र, एव (अत्रैव), भूत्वा, इति, च, बहिः, अहो, एवम्, विचिन्त्य, सह, तदा, यदि, अथ, श्रुत्वा, सदा, परन्तु (परम् + तु), प्रविश्य, सहसा, कदापि (कदा + अपि) ये अव्यय हैं। इनकी उपर्युक्त कोटियों में पहचान की जा सकती है।

तृतीयः पाठः

भगवदज्जुकम्

[*भगवदज्जुकम्* संस्कृत का एक प्रसिद्ध प्रहसन है। इसके रचयिता बोधायन कहे गये हैं। इसमें वसन्तसेना नामक गणिका अपनी सेविका परभृतिका के साथ उद्यान में विहार के लिए आती है। उसका प्रेमी रामिलक उससे मिलने वहाँ आता है। इसी बीच यम के द्वारा भेजा गया दूत जिसे वसन्तसेना नाम की किसी अन्य स्त्री के प्राण ले जाना है, सर्प बनकर गलती से इस वसन्तसेना को डस लेता है और उसका जीव लेकर यमलोक चला जाता है।

इसी उद्यान में एक परिव्राजक *(संन्यासी)* अपने शिष्य के साथ आये हुए हैं। वसन्तसेना को मृत देखकर शिष्य शाण्डिल्य दुःखी हो जाता है। तब परिव्राजक योग से अपना जीव गणिका की काया में प्रवेश करा देते हैं। गणिका जीवित हो जाती है। उधर गलत जीव लाने पर यमराज यमपुरुष को डाँट-डपटकर वापस भेजते हैं। उद्यान में वापस आकर यमपुरुष देखता है कि जिस गणिका के प्राण वह ले गया था वह संन्यासी की तरह सबको उपदेश दे रही है। तब यमपुरुष संन्यासी के खेल को आगे बढ़ाने के लिए गणिका का जीव संन्यासी के देह में डाल देता है। गणिका संन्यासी की तरह बोलती है, संन्यासी गणिका की तरह- इस उलट फेर से इस नाटक में एक विसंगत हास्यपूर्ण एवं रोचक स्थिति बन जाती है।]

नकारान्तपुँल्लिङ्गः

(ततः प्रविशन्ति एकतः परिव्राजकस्य जीवेन आविष्टा वसन्तसेना, चेटी, रामिलकश्च; परिव्राजकस्य निर्जीवदेहेन सह शिष्यः शाण्डिल्यः अपरतः अन्यया चेट्या सह वैद्यः)

वैद्यः - कुत्र सा?

चेटी - एषा खलु अज्जुका न तावत् सत्त्वस्थिता।

वैद्यः - अरे इयं सर्पेण दष्टा।

चेटी - कथमार्यो जानाति?

वैद्यः - महान्तं विकारं करोतीति। विषतन्त्रम् आरभे। कुण्डल-कुटिलगामिनि! मण्डलं प्रविश प्रविश। वासुकिपुत्र! तिष्ठ तिष्ठ। श्रू श्रू। अहं ते सिरावेधं करिष्यामि। कुत्र कुठारिका।

गणिका - मूर्ख वैद्य! अलं परिश्रमेण।

वैद्यः - पित्तमप्यस्ति। अहं ते पित्तं वातं कफं च नाशयामि।

रामिलकः - भोः! क्रियतां यत्नः। न खल्वकृतज्ञा वयम्।

वैद्यः - गुलिकाः आनयामि।

(*निष्क्रान्तः*)

(*ततः प्रविशति यमपुरुषः*)

यमपुरुषः - भोः! भर्त्सितोऽहं यमेन।

न सा वसन्तसेनेयं क्षिप्रं तत्रैव नीयताम्।
अन्या वसन्तसेना या क्षीणायुस्तामिहाऽनय।।

यावदस्याश्शरीरमग्निसंयोगं न स्वीकरोति तावत्सप्राणामेनां करोमि
(*विलोक्य*) अये! उत्थिता खल्वियम्। भो! किन्नु खल्विदम्।

अस्या जीवो मम करे उत्थितैषा वराङ्गना।
आश्चर्यं परमं लोके भुवि पूर्वं न दृश्यते।।

(*सर्वतोऽवलोक्य*)

अये! अयमत्रभवान् योगी परिव्राजकः क्रीडति। किमिदानीं करिष्ये। भवतु, दृष्टम्। अस्या गणिकाया आत्मानं परिव्राजकशरीरे न्यस्य अवसिते कर्मणि यथास्थानं विनियोजयामि।

(तथा कृत्वा निष्क्रान्तः)

परिव्राजकः - *(उत्थाय गणिकायाः स्वरेण)* परभृतिके! परभृतिके!

शाण्डिल्यः - अरे! प्रत्यागतप्राणः खलु भगवान्।

परिव्राजकः - कुत्र कुत्र रामिलकः।

रामिलकः - भगवन्नयमस्मि।

शाण्डिल्यः - भगवन् किमिदम्? रुद्राक्षग्रहणोचितः वामहस्तः शङ्खवलयपूरित इव मे प्रतिभाति। नैव नैव।

परिव्राजकः - रामिलक! आलिङ्ग माम्।

(ततः प्रविशति वैद्यः)

वैद्यः - गुलिकाः मया आनीताः। उदकम् उदकम्।

चेटी - इदम् उदकम्।

वैद्यः - गुलिकाः अवघट्टयामि।

गणिका - (*संन्यासिनः स्वरेण*) मूर्ख वैद्य! जानासि कतमेन सर्पेण इयं स्त्री दष्टा?

वैद्यः - अरे, इयं प्रेतेन आविष्टा।

गणिका - शास्त्रं जानासि?

वैद्यः - अथ किम्?

गणिका - ब्रूहि वैद्यशास्त्रम्।

वैद्यः - शृणोतु भवती।

वातिकाः पैत्तिकाश्चैव श्लैष्मिकाश्च महाविषाः।
त्रीणि सर्पा भवन्त्येते चतुर्थो नाधिगम्यते।।

णिका - अयमपशब्दः। त्रयः सर्पा इति वक्तव्यम्। 'त्रीणि' नपुंसकं भवति।

द्यः - अरे, अरे! इयं वैयाकरणसर्पेण खादिता भवेत्।

णिका - कियन्तो विषवेगाः?

द्यः - विषवेगाः शतम्।

णिका - न न, सप्त ते विषवेगाः। तद्यथा।

रोमाञ्चो मुखशोषश्च वैवर्ण्यं चैव वेपथुः।
हिक्का श्वासश्च संमोहः सप्तैता विषविक्रियाः।।

द्यः - न खल्वस्माकं विषयः। नमो भगवत्यै। गच्छामि तावदहम्।

(*निष्क्रान्तः*)

(*प्रविश्य*)

मपुरुषः - भगवन्मुच्यतां गणिकायाः शरीरम्।

णिका - अस्तु।

मपुरुषः - यथा अस्याः जीवविनिमयं कृत्वा यावदहमपि स्वकार्यमनुतिष्ठामि।

(*तथा कृत्वा निष्क्रान्तः*)

रिव्राजकः - शिवमस्तु सर्वजगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।

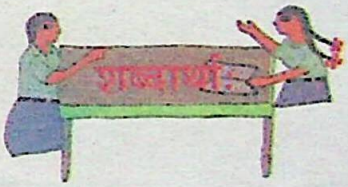

अज्जुका	-	सम्मान्य महिला/गणिका के लिये संज्ञा और संबोधन
एकतः	-	एक ओर
परिव्राजकस्य	-	संन्यासी का
जीवेन	-	प्राण के साथ
आविष्टा	-	प्रविष्ट हुई
अपरतः	-	दूसरी ओर

चेटी	-	दासी, नौकरानी
सत्त्वस्थिता	-	प्राण में स्थित
दष्टा	-	डस ली गयी
विषतन्त्रम्	-	झाड़-फूँक को/विष भगाने की विद्या
आरभे	-	आरम्भ करता हूँ/शुरू करता हूँ
कुण्डलकुटिलगामिनि!	-	हे कुण्डल के समान टेढ़ी चाल व
मण्डलम्	-	ओझाओं के द्वारा साँप पकड़ने के लि पृथ्वीतल पर बनायी जाने वाली वृत्ताक आकृति
सिरावेधम्	-	नाड़ी काटना
कुठारिका	-	छोटी कुल्हाड़ी
पित्तम्, वातम्	-	पित्त एवं वात (वायु) से उत्पन्न वाले रोग
क्रियताम्	-	करें
यत्नः	-	श्रम, परिश्रम, मेहनत
अकृतज्ञा	-	कृतघ्न
गुलिकाः	-	दवाई की गोलियाँ
निष्क्रान्तः	-	निकल गया
भर्त्सितः	-	डाँटा गया
क्षिप्रम्	-	शीघ्र
नीयताम्	-	ले जायें
क्षीणायुः (क्षीण+आयुः)	-	जिसकी आयु समाप्त हो गयी है
इह	-	यहाँ
अग्निसंयोगम्	-	आग से संयोग
सप्राणाम्	-	प्राण सहित को

उत्थिता	-	उठ गयी
वराङ्गना (वर+अङ्गना)	-	श्रेष्ठ नारी
भुवि	-	पृथ्वी पर
न्यस्य	-	रखकर
अवसिते	-	समाप्त होने पर
प्रत्यागतप्राणः	-	जिसका प्राण लौट आया है
शङ्खवलयपूरित	-	शङ्ख निर्मित कड़ा से युक्त
अवघट्टयामि	-	घोंटता हूँ/पीसता हूँ
कतमेन	-	किस
कियन्तः	-	कितने
मुखशोषः	-	मुँह का सूखना
वैवर्ण्यम्	-	चेहरे का रंग उड़ना
वेपथुः	-	काँपना/कँपकँपी
हिक्का	-	हिचकी
संमोहः	-	बेहोशी, मूर्च्छा
विषवेगाः	-	विष के प्रभाव
विषविक्रियाः	-	विष के विकार
मुच्यताम्	-	छोड़ दें
उपगम्य	-	पास जाकर
जीवविनिमयम्	-	प्राण की अदला-बदली
भूतगणाः	-	प्राणिगण
प्रयान्तु	-	जायें

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-**

(क) गणिकायाः नाम किम्?

(ख) परिव्राजकस्य शिष्यः कः आसीत्?

(ग) यमदूतः गणिकायाः जीवं कस्य शरीरे निदधाति?

(घ) परहितनिरता के भवन्तु?

2. **सन्धिविच्छेदं कुरुत-**

यथा - तत्रैव	तत्र	+	एव
भगवन्नयम्	.....	+	.....
श्वासश्च	.....	+	.....
खल्वकृतज्ञाः	.....	+	.....
सप्तैताः	.....	+	.....
करोतीति	.....	+	.....

3. **उदाहरणानुसारं अव्ययपदानि चिनुत-**

यथा - राधा अपि नृत्यति।	अपि
(क) त्वं कदा गृहं गमिष्यसि।	.....
(ख) अधुना कः समयः।	.....
(ग) महात्मागान्धी सदा सत्यं वदति स्म।	.....
(घ) अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।	.....
(ङ) इदानीं त्वं श्लोकं पठ।	.....

4. अधोलिखितानि कथनानि कः/का कं/कां प्रति कथयाति?

	कः/का	कं/कां प्रति
(क) मूर्ख वैद्य! अलं परिश्रमेण।	.....	.....
(ख) कुत्र कुत्र रामिलकः।	.....	.....
(ग) विषवेगाः शतम्।	.....	.....
(घ) गुलिकाः मया आनीताः।	.....	.....
(ङ) इदम् उदकम्।	.....	.....
(च) अरे! प्रत्यागतप्राणः खलु भगवान्।	.....	.....

5. विपरीतार्थकाः शब्दाः लेखनीयाः-

गुणाः .....

स्वीकारः .....

दक्षिणहस्तः .....

अनन्या .....

कृतज्ञः .....

6. अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

गुलिकाः - .....

कुठारिका - .....

क्षिप्रम् - .....

यत्नः - .....

लोके - .....

7. उदाहरणानुसारेण पदनिर्माणं कुरुत-

	मूलशब्दाः	वचनम्	पदानि
यथा-	शिल्पिन्	प्रथमा-एकवचने	शिल्पी
	धनिन्	द्वितीया-एकवचने	.....
	ज्ञानिन्	तृतीया-एकचने	.....
	महत्त्वाकांक्षिन्	द्वितीया-बहुवचने	.....
	बहुभाषिन्	तृतीया-बहुवचने	.....
	दण्डिन्	द्वितीया-बहुवचने	.....

योग्यता-विस्तारः

पर्यायवाचिनः शब्दाः

सर्पः - भुजगः, व्यालः, विषधरः चक्री, अहिः, पवनाशनः, भोगी।
लोकः - संसारः, जगत्, भुवनम्, विश्वम्।
शरीरम् - देहः, तनुः, गात्रम्, वपुः, कायः, विग्रहः।
भूः - धरा, पृथ्वी, धरणी, अचला, अनन्ता, धरित्री, वसुधा, वसुन्धरा, वसुम
क्षिप्रम् - द्रुतम्, शीघ्रम्, त्वरितम्, सत्वरम्, चपलम्, तूर्णम्, अविलम्बितम्।

* प्रहसन रूपक का भेद है जो हास्यरस प्रधान होता है। *भगवदज्जुकम्* संस्कृत ना साहित्य का प्रसिद्ध प्रहसन है। यह हमारे देश में तथा विदेशों में भी मूल संस्कृ तथा अन्य भाषाओं में अनूदित हो कर विश्व के श्रेष्ठ नाट्यनिर्देशकों के निर्दे में मंच पर अनेक बार खेला गया है।
इस प्रहसन का अभिनय केरल के मंदिरों में प्राचीन काल से ही पारंपरिक रूप होता रहा है। इसकी दार्शनिक व आध्यात्मिक व्याख्या भी की जाती रही है।
* राष्ट्रिय नाट्य विद्यालय (एन्.एस्.डी), दिल्ली के पाठ्यक्रम में यह स्वीकृत है
* दूरदर्शन धारावाहिक के रूप में (सात कड़ियों में) भी इसका प्रसारण हो चुका

चतुर्थः पाठः

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

[श्रीधरभास्कर वर्णेकर के द्वारा विरचित प्रस्तुत गीत में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया गया है। इसके प्रणेता राष्ट्रवादी कवि हैं और इस गीत के द्वारा उन्होंने जागरण तथा कर्मठता का सन्देश दिया है।]

लोट्-विधिलिङ्-प्रयोगः

चल चल पुरतो निधेहि चरणम्।
सदैव पुरतो निधेहि चरणम्।।

गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम्।
विनैव यानं नगारोहणम्।।
बलं स्वकीयं भवति साधनम्।
सदैव पुरतो .....।।

पथि पाषाणा विषमाः प्रखराः।
हिंस्राः पशवः परितो घोराः।।
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम्।
सदैव पुरतो .....।।

जहीहि भीतिं भज भज शक्तिम्।
विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम्।।
कुरु कुरु सततं ध्येय-स्मरणम्।
सदैव पुरतो .....।।

पुरतो (पुरतः)	–	आगे
निधेहि	–	रखो
गिरिशिखरे	–	पर्वत की चोटी पर
निजनिकेतनम्	–	अपना निवास
विनैव (विना+एव)	–	बिना ही
नगारोहणम् (नग+आरोहणम्)	–	पर्वत पर चढ़ना
स्वकीयम्	–	अपना
पथि	–	मार्ग में
पाषाणाः	–	पत्थर
विषमाः	–	असामान्य
प्रखराः	–	तीक्ष्ण, नुकीले
हिंस्राः	–	हिंसक
परितो (परितः)	–	चारों ओर
घोराः	–	भयङ्कर, भयानक
सुदुष्करम्	–	अत्यन्त कठिनतापूर्वक साध्य
जहीहि	–	छोड़ो/छोड़ दो
भज	–	भजो, जपो
विधेहि	–	करो
अनुरक्तिम्	–	प्रेम, स्नेह
सततम्	–	लगातार
ध्येयस्मरणम्	–	उद्देश्य (लक्ष्य) का स्मरण

अभ्यासः

1. पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत।

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) स्वकीयं साधनं किं भवति?

(ख) पथि के विषमाः प्रखराः?

(ग) सततं किं करणीयम्?

(घ) एतस्य गीतस्य रचयिता कः?

(ङ) सः कीदृशः कविः मन्यते?

3 मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

निधेहि	विधेहि	जहीहि	देहि	भज	चल	कुरु

यथा-त्वं पुरतः चरणं निधेहि।

(क) त्वं विद्यालयं .....।

(ख) राष्ट्रे अनुरक्तिं .....।

(ग) मह्यं जलं .....।

(घ) मूढ! ..... धनागमतृष्णाम्।

(ङ) ..... गोविन्दम्।

(च) सततं ध्येयस्मरणं ..... ।

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

4. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एव	खलु	तथा	परितः	पुरतः	सदा	विना

(क) विद्यालयस्य ..... एकम् उद्यानम् अस्ति।

(ख) सत्यम् ..... जयते।

(ग) किं भवान् स्नानं कृतवान् ..... ?

(घ) सः यथा चिन्तयति ..... आचरति।

(ङ) ग्रामं ..... वृक्षाः सन्ति।

(च) विद्यां ..... जीवनं वृथा।

(छ) ..... भगवन्तं भज।

5. विलोमपदानि योजयत-

पुरतः	विरक्तिः
स्वकीयम्	आगमनम्
भीतिः	पृष्ठतः
अनुरक्तिः	परकीयम्
गमनम्	साहसः

6. लट्लकारपदेभ्यः लोट्-विधिलिङ्लकारपदानां निर्माणं कुरुत-

लट्लकारे	लोट्लकारे	विधिलिङ्लकारे
यथा-पठति	पठतु	पठेत्
खेलसि	.....	.....
खादन्ति	.....	.....
पिबामि	.....	.....
हसतः	.....	.....
नयामः	.....	.....

7. अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

यथा - गिरिशिखर (सप्तमी-एकवचने) - गिरिशिखरे

पथिन् (सप्तमी-एकवचने) - .....

राष्ट्र (चतुर्थी-एकवचने) - .....

पाषाण (सप्तमी-एकवचने) - .....

यान (द्वितीया-बहुवचने) - .....

शक्ति (प्रथमा-एकवचने) - .....

पशु (सप्तमी-बहुवचने) - .....

8. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा-पुरतः चरणं निधेहि। [आम्]

(क) निजनिकेतनं गिरिशिखरे अस्ति। [ ]

(ख) स्वकीयं बलं बाधकं भवति। [ ]

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

(ग) पथि हिंस्राः पशवः न सन्ति। ☐

(घ) गमनं सुकरम् अस्ति। ☐

(ङ) सदैव अग्रे एव चलनीयम्। ☐

9. **वाक्यरचनया अर्थभेदं स्पष्टीकुरुत-**

परितः	–	पुरतः
नगः	–	नागः
आरोहणम्	–	अवरोहणम्
विषमाः	–	समाः

योग्यता-विस्तारः

न गच्छति इति नगः। पतन् गच्छतीति पन्नगः।

उरसा गच्छतीति उरगः। वसु धारयतीति वसुधा।

खे (आकाशे) गच्छति इति खगः। सरतीति सर्पः।

डॉ. श्रीधरभास्कर वर्णेकर (1918-2005 ई.) नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में काव्य, नाटक, गीत इत्यादि विधाओं की अनेक रचनाएँ कीं। तीन खण्डों में *संस्कृत-वाङ्मय-कोश* का भी उन्होंने सम्पादन किया। उनक रचनाओं में 'शिवराज्योदयम्' महाकाव्य एवं 'विवेकानन्दविजयम्' नाटक सुप्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत गीत में पज्झटिका छन्द का प्रयोग है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 1 मात्राएँ होती हैं। हिन्दी में इसे चौपाई कहा जाता है।

पञ्चमः पाठः

धर्मे धमनं पापे पुण्यम्

['धर्मे धमनं पापे पुण्यम्' (धरम में धक्का, पाप में पुण्य) मध्यप्रदेश के डिण्डोरी ज़िले में परधानों के बीच प्रचलित लोककथा है। यह कथा पञ्चतन्त्र की शैली में रचित है। इस कथा में यह स्पष्ट किया गया है कि संकट में पड़ने पर भी चतुराई एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व से उससे निकला जा सकता है।]

ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्गः

आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविकां निर्वाहयति स्म।। एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत्। सोऽचिन्तयत्, 'व्याघ्रः मां खादिष्यति अतएव पलायनं करणीयम्।' व्याघ्रः न्यवेदयत्-'भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।' तदा सः व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। व्याघ्रः क्लान्तः आसीत्। सोऽवदत्, 'भो

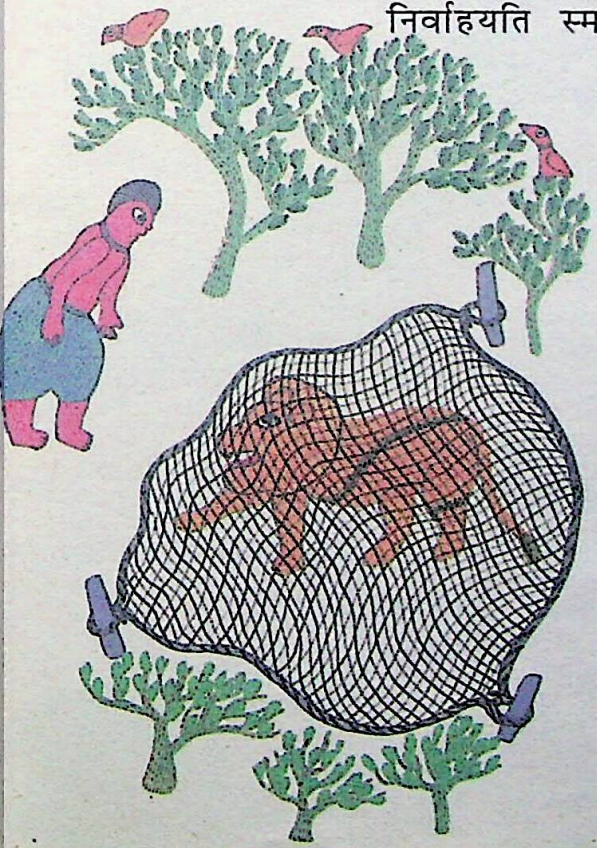

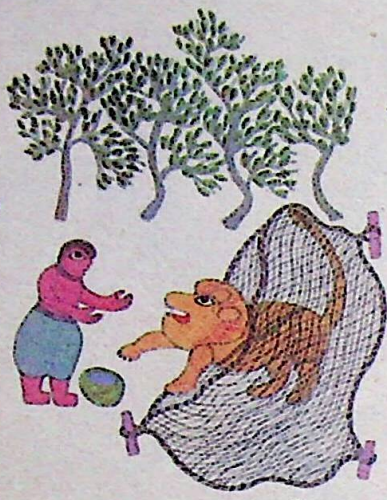

मानव! पिपासुः अहम्। नद्याः जलमानीय मम पिपासां शम
व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत्, 'शान्ता मे पिपा
साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि
चञ्चलः उक्तवान्, 'अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितव
त्वया मिथ्या भणितम्। त्वं मां खादितुम् इच्छसि?

व्याघ्रः अवदत्, 'अरे मूर्ख! धर्मे धमनं पापे पु
भवति एव। पृच्छ कमपि।'

चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्। नदीजलम् अवदत्, 'एवमेव भवति, जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते, अतः धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव।'

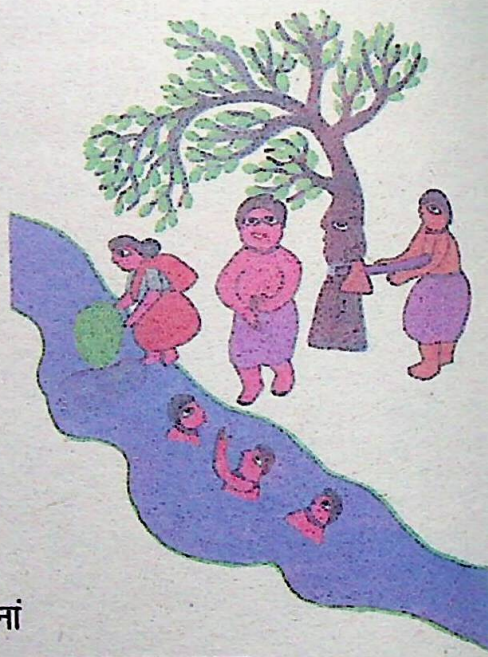

चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्। वृक्षः अवदत्, 'मानवाः अस्माकं छायायां विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः कुठारैः प्रहृत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति। यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति। धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव।'

समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना एतां वार्तां शृणोति स्म। सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति-"का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय।" सः अवदत्-"अहह मातृस्वसः! अ
त्वं समागतवती। मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणाः रक्षिताः, परम् एषः मामेव खा
इच्छति।" तदनन्तरं सः लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत्।

लोमशिका चञ्चलम् अकथयत्-बाढम्, त्वं जालं प्रसारय। पुनः सा व्याघ्रम् अवदत्-केन प्रकारेण त्वम् एतस्मिन् जाले बद्धः इति अहं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि। व्याघ्रः तद् वृत्तान्तं प्रदर्शयितुं तस्मिन् जाले प्राविशत्। लोमशिका पुनः अकथयत्-सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय। सः तथैव समाचरत्। अनारतं कूर्दनेन सः श्रान्तः अभवत्। जाले बद्धः सः व्याघ्रः क्लान्तः सन् निःसहायो भूत्वा तत्र अपतत् प्राणभिक्षामिव च अयाचत। लोमशिका व्याघ्रम् अवदत् 'सत्यं त्वया भणितम्' धर्मे धमनं पापे पुण्यम् तु भवति एव।' जाले पुनः तं बद्धं दृष्ट्वा सः व्याधः प्रसन्नो भूत्वा गृहं प्रत्यावर्तत।

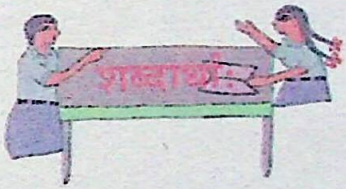

धमनम्	-	धौंकना, धक्का, क्रूरतापूर्ण कार्य
व्याधः	-	शिकारी, बहेलिया
स्वीयाम्	-	स्वयं की
दौर्भाग्यात्	-	दुर्भाग्य से
बद्धः	-	बँधा हुआ
पलायनम्	-	पलायन करना, भाग जाना
न्यवेदयत् (नि+अवेदयत्)	-	निवेदन किया
मोचयिष्यसि	-	मुक्त करोगे/छुड़ाओगे

निरसारयत् (निः+असारयत्)	-	निकाला
क्लान्तः	-	थका हुआ
पिपासुः	-	प्यासा
शमय	-	शान्त करो/मिटाओ
बुभुक्षितः	-	भूखा
भणितम्	-	कहा
प्रक्षालयन्ति	-	धोते हैं
विसृज्य	-	छोड़कर
निवर्तन्ते	-	चले जाते हैं/लौटते हैं
उपगम्य	-	पास जाकर
विरमन्ति	-	विश्राम करते हैं
कुठारैः	-	कुल्हाड़ियों से
प्रहृत्य	-	प्रहार करके
छेदनम्	-	काटना
लोमशिका	-	लोमड़ी
निलीना	-	छुपी हुई
उपसृत्य	-	समीप जाकर
मातृस्वसः!	-	हे मौसी
समागतवती	-	पधारी/आई
निखिलाम्	-	सम्पूर्ण, पूरी
बाढम्	-	ठीक है, अच्छा

प्रत्यक्षम्	-	अपने (समक्ष) सामने
वृत्तान्तम्	-	पूरी कहानी
प्रदर्शयितुम्	-	प्रदर्शन करने के लिए
प्राविशत् (प्र+अविशत्)	-	प्रवेश किया
कूर्दनम्	-	उछल-कूद
अनारतम्	-	लगातार
श्रान्तः	-	थका हुआ
प्रत्यावर्तत (प्रति+आ+अवर्तत)	-	लौट आया

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) व्याधस्य नाम किम् आसीत्?

(ख) चञ्चलः व्याघ्रं कुत्र दृष्टवान्?

(ग) विस्तृते जाले कः बद्धः आसीत्।

(घ) बदरी-गुल्मानां पृष्ठे का निलीना आसीत्?

(ङ) अनारतं कूर्दनेन कः श्रान्तः अभवत्?

2. संस्कृतेन उत्तरत-

(क) चञ्चलेन वने किं कृतम्?

(ख) व्याघ्रस्य पिपासा कथं शान्ता अभवत्?

(ग) जलं पीत्वा व्याघ्रः किम् अवदत्?

(घ) चञ्चलः 'मातृस्वसः!' इति कां सम्बोधितवान्?

(ङ) जाले पुनः बद्धं व्याघ्रं दृष्ट्वा व्याधः किम् अकरोत्?

3. अधोलिखितानि वाक्यानि कः/का कं/कां प्रति कथयति-

	कः/का	कं/क
यथा - इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।	व्याघ्रः	व्याध
(क) कल्याणं भवतु ते।	.....	.....
(ख) जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति।	.....	.....
(ग) अरे मूर्ख! धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव।	.....	.....
(घ) यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति।	.....	.....
(ङ) सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय।	.....	.....

4. सन्धिं कृत्वा लिखत-

मृग + आदीनाम् = ...

तथा + एव = ...

कुत्र + अपि = ...

बुभुक्षितः + अस्मि = ...

प्रति + आ + अवर्तत = ...

5. उदाहरणानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- मातृ (प्रथमा)	माता	मातरौ	मातरः
स्वसृ (प्रथमा)	.....	.....	.....
मातृ (तृतीया)	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
स्वसृ (तृतीया)	.....	.....	.....
स्वसृ (सप्तमी)	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
मातृ (सप्तमी)	.....	.....	.....

स्वसृ (षष्ठी)	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
मातृ (षष्ठी)	.....	.....	.....

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथां पूरयत-

दृष्ट्वा	स्वकीयैः	कृतवान्	कर्तनम्	वृद्धः
साट्टहासम्	तर्हि	क्षुद्रः	मोचयितुम्	अकस्मात्

एकस्मिन् वने एकः ..... व्याघ्रः आसीत्। सः एकदा व्याधेन विस्तारिते जाले बद्धः अभवत्। सः बहुप्रयासं ..... किन्तु जालात् मुक्तः नाभवत्। ..... तत्र एकः मूषकः समागच्छत्। बद्धं व्याघ्रं ..... सः तम् अवदत्-अहो! भवान् जाले बद्धः। अहं त्वां ..... इच्छामि। तच्छ्रुत्वा व्याघ्रः .....अवदत्-अरे! त्वं ..... जीवः मम सहाय्यं करिष्यसि। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि .....अहं त्वां न हनिष्यामि। मूषकः ..... लघुदन्तैः तज्जालस्य ..... कृत्वा तं व्याघ्रं बहिः कृतवान्।

7. धातुं प्रत्ययं च लिखत-

पदानि	=	धातुः		प्रत्ययः
यथा - गन्तुम्	=	गम्	+	तुमुन्
द्रष्टुम्	=	.....	+	.....

धर्मे धमनं पापे पुण्यम्

करणीय	=	.....	+	.....
पातुम्	=	.....	+	.....
खादितुम्	=	.....	+	.....
कृत्वा	=	.....	+	.....

योग्यता-विस्तारः

परधान और उनकी कलापरम्परा-परधान मुख्यतः गौंड राजाओं की वंशावली औ कथा के गायक थे। गौंड राज्य के समाप्त होने पर ये गायक अपनी गायी जाने वाल कथाओं पर चित्र बनाने लगे। इस समुदाय की कथाओं और चित्रकला के बारे में औ अधिक जानने के लिए पुस्तक 'जनगढ़ कलम' (वन्या प्रकाशन, भोपाल) देखी जा सकती है। प्रस्तुत कथा के संकलन-कर्ता हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री उदयन वाजपेयी हैं।

लोककथाओं में जीवन की रंग-बिरंगी तस्वीर मिलती है। दिलचस्प बात यह है कि लोककथाएँ किसी एक भाषा या इलाके तक सीमित नहीं रहतीं। उन्हें कहने वाले जगह-जगह घूमते हैं इसलिए रूप और वर्णन में हेरफेर के साथ दूसरी जगहों में भी मिल जाती हैं। क्षेत्र विशेष की संस्कृति की झलक उनको अनूठा बनाती है। स्थान और काल के अनुसार लोककथाओं की नई-नई व्याख्याएँ होती रहती हैं। इस क्रम में उनमें परिवर्तन भी होता है।

षष्ठः पाठः

प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा

[प्रस्तुत कहानी शिक्षाविद् गिजु भाई (1885-1939) की रचना 'पेमला पेमली की कहानी' का अनुवाद है। गुजरात के भावनगर के विद्यालय में पढ़ाते हुए उन्होंने बाल शिक्षण के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए। लम्बा समय गुजर जाने के बावजूद उनके विचार प्रासङ्गिक हैं। इस कहानी में एक महिला घरेलू कामों को पूरा करने की अपनी पारम्परिक भूमिका को वाक् चातुर्य से बदलने की कोशिश करती है।]

उपसर्गः प्रत्ययश्च

एकः आसीत् प्रेमलः एका चासीत् प्रेमली। काष्ठच्छेदेन श्रान्तः प्रेमलः सायंकाले गृहमागच्छत्, प्रेमलीं चावदत्- प्रेमलि! अद्य खलु भृशं श्रान्तोऽस्मि। मह्यं जलम् उष्णं कृत्वा देहि। अहं स्नात्वा तस्मिन् जले चरणौ स्थापयामि। तेन मम श्रान्तिः अपगमिष्यति।

प्रेमली अवदत्- तवानुरोधं कथमहम् अस्वीकुर्याम्? पश्य, तत्र हण्डी उपरि स्थापिता। ताम् अवतारय। प्रेमलः हण्डीमवातारयत्। ततः स अवदत्- अधुना किं करोमि? प्रेमली अवदत्- निकटे कूपः वर्तते। तत्र गत्वा जलं भृत्वा आनय। प्रेमलः घटे जलं सम्पूर्य आगच्छत्। पुनः प्रेमलीम् अपृच्छत्- इदानीं किम्?

प्रेमली अवदत्- अधुना चुल्यां काष्ठानि प्रज्ज्वालय। प्रेमलः काष्ठानि प्रज्ज्वाल्य अपृच्छत्- अग्रे किं करवाणि? प्रेमली अकथयत्- यावत् चुल्ली सम्यक् न ज्वलति, तावत् फूत्कुरु, किमन्यत्? प्रेमलेन चुल्ली सम्यक् प्रज्वालिता। अथ च अपृच्छत्- अधुना किम् करवाणि? प्रेमली अवदत्- घटात् हण्ड्यां जलं पूरय। ततः हण्डीं चुल्याम् उपरि स्थापय।

प्रेमलः हण्डीं चुल्याम् अस्थापयत्। किञ्चित् कालानन्तरं च पुनः प्रेमल
अपृच्छत्- इदानीं किं करवाणि? प्रेमली अवदत्- किमन्यत्, हण्डीम् अवता

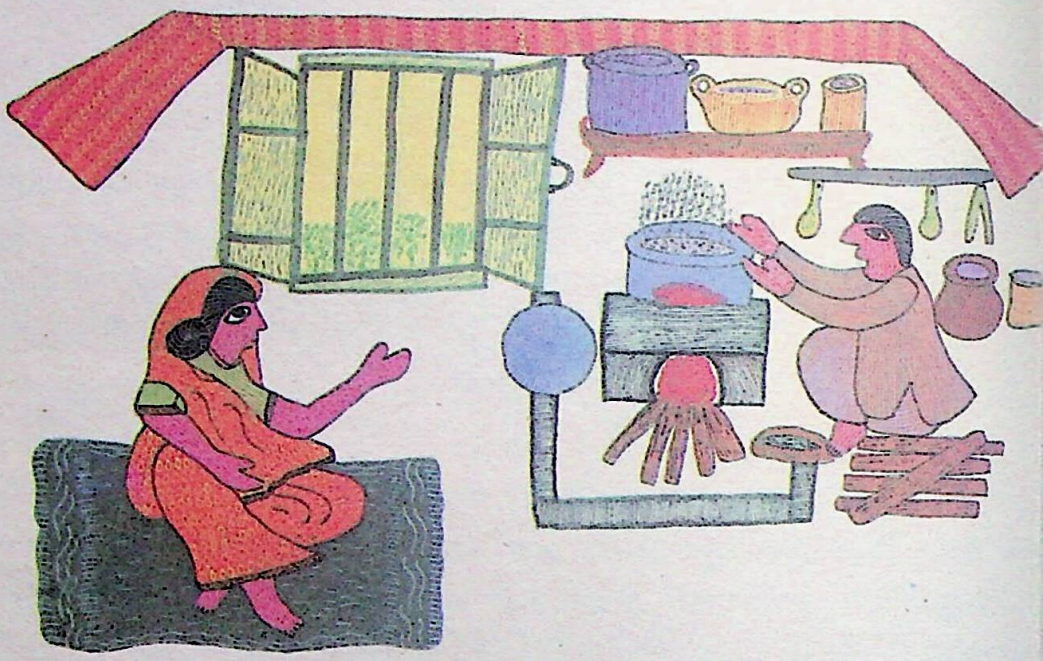

हण्डीमवतार्य प्रेमलः पृच्छति- अधुना? प्रेमली वदति-अधुना हण्डीं स्नानगृहे स्था
प्रेमलः हण्डीं स्नानगृहे निधाय पृच्छति- अधुना? प्रेमली निरदिशत्-सम्प्रति स्नानं कु
प्रेमलः स्नात्वा अपृच्छत्-अधुना किं करणीयम्?

प्रेमली अवदत्- इदानीं हण्डीं यथास्थानं निधेहि। प्रेमलः हण्डीं संस्थाप्य ज
हस्तेन संस्पृश्य अकथयत्- अरे, कीदृशं पुष्पमिव शरीरं लघु जातम्। यदि त्वं प्रति
एवमेव जलम् उष्णं कृत्वा मह्यं ददासि तर्हि कियत् शोभनं भवेत्। प्रेमली अवदत्- कि
न इति कथयामि? परन्तु अत्र कस्य आलस्यम्? प्रेमलः अवदत्- आलस्यं तु मं
परम् अग्रे आलस्यं न करिष्यामि।

प्रेमली अवदत्- अस्तु! सम्प्रति आवां भोजनं कुर्वः।

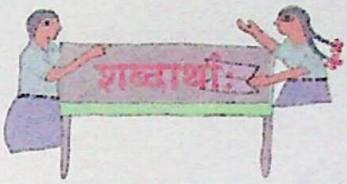

काष्ठच्छेदेन	–	लकड़ियाँ काटने से
खलु	–	अवश्य ही (अव्यय)
स्नात्वा	–	स्नान करके
श्रान्तिः	–	थकान
अपगमिष्यति	–	दूर हो जाएगी
अस्वीकुर्याम्	–	अस्वीकार करूँ
हण्डी	–	हड़िया
अवातारयत् (अव+अतारयत्)	–	उतार लिया
भृत्वा	–	भरकर
चुल्याम्	–	चूल्हे में, पर
काष्ठानि	–	लकड़ियों को
प्रज्ज्वालय	–	जलाओ
सम्यक्	–	अच्छी तरह से
फूत्कुरु	–	फूँको
कालानन्तरम् (काल+अनन्तरम्)	–	समय के बाद
निधाय	–	रखकर
निरदिशत् (निः+अदिशत्)	–	निर्देश किया
संस्थाप्य	–	रखकर
संस्पृश्य	–	छूकर
कीदृशम्	–	कैसा
लघु	–	हल्का
कियत्	–	कितना

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) प्रेमलः कथं श्रान्तः आसीत्?

(ख) प्रेमलः कदा गृहम् आगच्छत्?

(ग) प्रेमलः कानि प्राज्वालयत्?

(घ) चुल्लीं प्रज्वालयितुं प्रेमलः किं कृतवान्?

(ङ) प्रेमली कस्य पत्नी आसीत्?

2. **अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गं चित्वा पृथक् कुरुत-**

यथा-अपगमिष्यति	=	अप	+	गमिष्यति
अवतारय	=	.....	+	.....
प्रज्ज्वाल्य	=	.....	+	.....
प्रहारः	=	.....	+	.....
पराजयः	=	.....	+	.....
उपहारः	=	.....	+	.....

3. **अधोलिखितेषु पदेषु उदाहरणानुसारेण धातुं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत-**

	पदानि		धातुः		प्रत्ययः
(क) यथा -	गत्वा	=	गम्	+	क्त्वा
	कृत्वा	=	.....	+	.....
	भृत्वा	=	.....	+	.....
	स्नात्वा	=	.....	+	.....

(ख) यथा - पठितुम् = पठ् + तुमुन्

कर्तुम् = ... + ...

खादितुम् = ... + ...

द्रष्टुम् = ... + ...

	पदानि		उपसर्गः		धातुः		प्रत्ययः
(ग) यथा -	आनीय	=	आ	+	नी	+	ल्यप्
	आगत्य	=	.....	+	.....	+	.....
	निधाय	=	.....	+	.....	+	.....
	आदाय	=	.....	+	.....	+	.....
	संस्पृश्य	=	.....	+	.....	+	.....

4. मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

निकटे	अधुना	कथयति	ददासि	हस्तेन	संस्थाप्य	पुष्पम्	तनुः

करेण = ...

कुसुमम् = ...

यच्छसि = ...

स्थापयित्वा = ...

वदति = ...

साम्प्रतम् = ...

शरीरम् = ...

पार्श्वे = ...

5. निर्देशानुसारम् उपसर्गं क्रियापदं च पृथक् कुरुत-

यथा - प्राचलत् = प्र + अचलत्

निरदिशत् = ... + ...

आगच्छत् = ... + ...

अवातारयत् = ... + ...

पराभवत् = ... + ...

प्राक्षालयत् = ... + ...

6. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत-

(क) सः हण्डीमवातारयत्।

(ख) सः चुल्लीमज्वालयत्।

(ग) सः हण्डीं स्नानगृहे अस्थापयत्।

(घ) सः घटे जलमभरत्।

(ङ) प्रेमलः गृहमागच्छत्।

(च) सः जलमुष्णमकरोत्।

(छ) सः भोजनमकरोत्।

(ज) सः स्नानमकरोत्।

7. अधोलिखितानां तद्भवपदानां तत्समपदानि चिनुत-

काठ - .....

हाँडी - .....

चूल्हा - .....

कूआँ - .....

फूँकना - .....

सप्तमः पाठः

जलवाहिनी

[प्रस्तुत गीत भोजपुरी लोकगीत का अनुवाद है। अनुवादक लब्ध-प्रतिष्ठ एवं अन्ताराष्ट्रियख्याति-प्राप्त प्रो. रामकरण शर्मा हैं। इसमें गाँव की पानी भरने वाली स्त्री का चित्रण किया गया है। वह कुएँ से घड़े में जल भरकर लाती है। जल लाते समय उसके मन में आने वाले अनेकभावों का वर्णन किया गया है।]

विशेष्य-विशेषणप्रयोगः

भरिष्याम्याहरिष्यामि च
सलिलकुम्भं कियत्कालम्। भरिष्या.....
शनैर्यदि यामि चिररात्राय
विलपिष्यति गृहे बालः।
द्रुतं यदि यामि वसनं मे
भवेदार्द्रं सलिलवेगैः।। भरिष्या.....

इमान् नूपुररवान् रुनझुन-
मयान् आकर्ण्य नागरिकाः।
सुखं शय्यामधिशयाना
इटिति ते जागरिष्यन्ति।। भरिष्या.....

तनुः कूपो महालम्ब-
स्तले तस्यास्ति पानीयम्।
कृषन्त्या मे घटं रज्ज्वा
करेऽप्यास्ते महास्फोटः।। भरिष्या.....

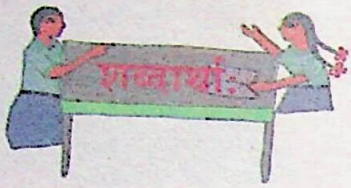

जलवाहिनी	–	पनिहारन
भरिष्याम्याहरिष्यामि (भरिष्यामि+आहरिष्यामि)	–	भरूँगी, लाऊँगी
सलिलकुम्भम्	–	पानी के घड़े को
शनैर्यदि (शनैः+यदि)	–	यदि धीरे से
यामि	–	जाती हूँ
चिररात्राय	–	बहुत समय तक
विलपिष्यति	–	रोएगा/विलाप करेगा
द्रुतम्	–	जल्दी, शीघ्र
भवेदार्द्रम् (भवेत्+आर्द्रम्)	–	गीला हो जाएगा
नूपुररवान्	–	पायल की ध्वनि
आकर्ण्य	–	सुन कर
इटिति	–	शीघ्र
महालम्बस्तले (महालम्बः+तले)	–	तल में काफी गहरा
तस्यास्ति (तस्य+अस्ति)	–	उसका है
कृषन्त्या	–	खींचने से
रज्ज्वा	–	रस्सी से
करेऽप्यास्ते (करे+अपि+आस्ते)	–	हाथ में होता है
महास्फोटः	–	फफोला
तनुः	–	छोटा

अभ्यासः

1. प्रस्तुतं गीतं सस्वरं गायत।

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) कूपः कीदृशः अस्ति?

(ख) महास्फोटः कुत्र आस्ते?

(ग) बालः कुत्र विलपिष्यति?

(घ) जलवाहिनी यदि द्रुतं गच्छेत् तर्हि किं स्यात्?

3. अधोलिखितेषु पदेषु यथापेक्षितं सन्धिं/विच्छेदं कुरुत-

(क) तस्य + अस्ति = ...

(ख) ..... + ... = अप्यास्ते

(ग) महालम्बः + तले = ...

(घ) ..... + ... = भरिष्याम्याहरिष्यामि

(ङ) सु + उक्तिः = ...

4. विशेषणैः सह विशेष्याणि योजयत-

विशेषण-पदानि	विशेष्य-पदानि
कियत्	कूपः
गभीरः	वसनम्
स्थूलः	नूपुररवान्
आर्द्रम्	कालम्
इमान्	विडालः

5. समानार्थकानि पदानि मेलयत-

सलिलम्	कुम्भः
गृहम्	शिशुम्
द्रुतम्	जलम्
घटः	शीघ्रम्
बालम्	भवनम्

6. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनं च लिखत-

	पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा-	रात्रिम्	स्त्रीलिङ्गम्	द्वितीया	एकवचनम्
	गृहे	.....	.....	.....
	सर्वान्	.....	.....	.....
	रज्ज्वा	.....	.....	.....
	वेगैः	.....	.....	.....
	कोलाहलाः	.....	.....	.....
	तले	.....	.....	.....

7. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च चित्वा वाक्यानि रचयत-

चिकित्सालयः	चिकित्सकः	रुग्णान्	चिकित्सार्थम्	नगरे	परिचरति
जनाः	अस्ति	आगच्छन्ति	परिचारिका	ददाति	करोति	औषधम्

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

8. अन्वयं कुरुत-

(क) द्रुतं यदि यामि वसनं मे
भवेदार्द्रं सलिलवेगैः।

(ख) कृषन्त्या मे घटं रज्ज्वा
करेऽप्यास्ते महास्फोटः।

योग्यता-विस्तारः

अधोलिखित मूल भोजपुरी लोक-गीत का अनुवाद के साथ अभ्यास कीजिये-

कत दिन राम भरब हम गगरी। कत दिन.
धीरे चलूँ त बालक घर रोवे
झटकी चलूँ त भींजे मोरा चुनरी। कत दिन.
रुनझुन रुनझुन पायल बाजे
पायल के सबद सुनि जागे सारी नगरी।। कत दिन.
पातर कुइयाँ पताले में पानी
खींचि खींचि गगरी हथेली पड़े फफरी।। कत दिन.

निम्नलिखित गीत का अभ्यास कर पठित गीत से इसके भावसाम्य को समझिये-

पन्थाः पिच्छिलः

घटीभारेण पन्थाः पिच्छिलस्त्वरया न चलनीयः।
अयं लघुलघुपदैर्मेयोऽनुनेये! नैव वलनीयः।।

इयं पङ्किला वीथी भयङ्करी तव नास्ति यातव्या,
सृजन्ती दरमसौ मन्दिरसृतिर्मयि साऽपि हातव्या,
अमार्गश्चाबलैर्लोको वदति कश्चिन्न श्रयणीयः।
घटीभारेण पन्थाः पिच्छिलस्त्वरया न चलनीयः।

पदे स्थगयति विरमविरमेति कथयति दृश्यमभितो यत्,
प्रतीयत आलि! किं नु वदानि हृदयं चञ्चुरं विचलत्,
निधेयमिदं वशेऽवसरो न हेयोऽयं न वरणीयः।
घटीभारेण पन्थाः पिच्छिलस्त्वरया न चलनीयः।

मनसि नृत्यस्वरो मदयति छमिति छूम् छूम् छनन-छूमिति,
तृषा यायाचते मुखरा प्रशमिता नास्मि नाऽभूमिति,
विमृश किं किंमवधीर्यमथो नु कः कश्चानुसरणीयः।
घटीभारेण पन्थाः पिच्छिलस्त्वरया न चलनीयः।

महाराजदीनपाण्डेयः

पिच्छिलः - फिसलने वाला
वलनीयः - इठलाकर चलने लायक
चञ्चुरम् - अत्यन्त चतुर (अथवा विशेषज्ञ)
यायाचते - बार-बार माँग रही है

अष्टमः पाठः

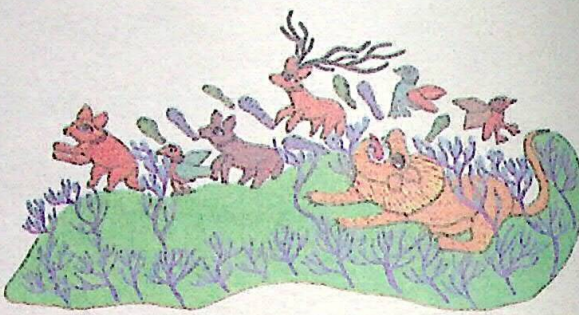

संसारसागरस्य नायकाः

[प्रस्तुत पाठ अनुपम मिश्र की कृति *आज भी खरे हैं तालाब* के *संसार सागर नायक* नामक अध्याय से लिया गया है। इसमें विलुप्त होते जा रहे पारम्परिक कौशल एवं शिल्प के धनी गजधर के सम्बन्ध में चर्चा की गयी है। पानी के मानव निर्मित तालाब, बावड़ी जैसे निर्माणों को लेखक ने यहाँ संसार सागर के में चित्रित किया है।]

के आसन् ते अज्ञातनामानः?

शतशः सहस्रशः तडागाः सहसैव शून्यात् न प्रकटीभूताः। इमे एव तडागाः संसारसागराः इति। एतेषाम् आयोजनस्य नेपथ्ये निर्मापयितृणाम् एककम्, निर्मातृणां च दशकम् आसीत्। एतत् एककं दशकं च आहत्य शतकं सहस्रं वा रचयतः स्म। परं विगतेषु द्विशतवर्षेषु नूतनपद्धत्या समाजेन यत्किञ्चित् पठितम्। पठितेन तेन समाजेन एककं दशकं सहस्रकञ्च इत्येतानि शून्ये एव परिवर्तितानि। अस्य नूतनसमाजस्य मनसि इयमपि जिज्ञासा नैव उद्भूता यद् अस्मात्पूर्वम् एतावतः तडागान् के रचयन्ति स्म। एतादृशानि कार्याणि कर्तुं ज्ञानस्य यो

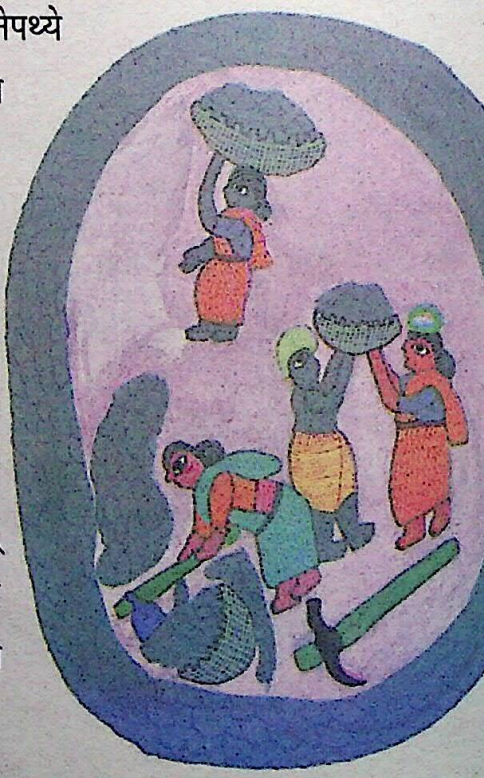

नूतनः प्रविधिः विकसितः, तेन प्रविधिनाऽपि पूर्वं सम्पादितम् एतत्कार्यं मापयितुं न केनापि प्रयतितम्।

अद्य ये अज्ञातनामानः वर्तन्ते, पुरा ते बहुप्रथिताः आसन्। अशेषे हि देशे तडागाः निर्मीयन्ते स्म, निर्मातारोऽपि अशेषे देशे निवसन्ति स्म।

गजधरः इति सुन्दरः शब्दः तडागनिर्मातॄणां सादरं स्मरणार्थम्। राजस्थानस्य केषुचिद् भागेषु शब्दोऽयम् अद्यापि प्रचलति। कः गजधरः? यः गजपरिमाणं धारयति स गजधरः। गजपरिमाणम् एव मापनकार्ये उपयुज्यते। समाजे त्रिहस्त- परिमाणात्मिकीं लौहयष्टिं हस्ते गृहीत्वा चलन्तः गजधराः इदानीं शिल्पिरूपेण नैव समादृताः सन्ति। गजधरः, यः समाजस्य गाम्भीर्यं मापयेत् इत्यस्मिन् रूपे परिचितः।

गजधराः वास्तुकाराः आसन्। कामं ग्रामीणसमाजो भवतु नागरसमाजो वा तस्य नव-निर्माणस्य सुरक्षाप्रबन्धनस्य च दायित्वं गजधराः निभालयन्ति स्म। नगरनियोजनात् लघुनिर्माणपर्यन्तं सर्वाणि कार्याणि एतेष्वेव आधृतानि आसन्। ते योजनां प्रस्तुवन्ति स्म, भाविव्ययम् आकलयन्ति स्म, उपकरणभारान् संगृह्णन्ति स्म। प्रतिदाने ते न तद् याचन्ते स्म यद् दातुं तेषां स्वामिनः असमर्थाः भवेयुः। कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य गजधरेभ्यः सम्मानमपि प्रदीयते स्म।

नमः एतादृशेभ्यः शिल्पिभ्यः।

सहसैव (सहसा+एव)	–	अकस्मात्, अचानक
प्रकटीभूताः	–	प्रकट हुए, दिखाई दिए
नेपथ्ये	–	पर्दे के पीछे
तडागाः	–	तालाब
निर्मापयितृणाम्	–	बनवाने वालों की
निर्मातृणाम्	–	बनाने वालों की
एककम्	–	इकाई
दशकम्	–	दहाई
शतकम्	–	सैकड़ा
सहस्त्रकम्	–	हजार
जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा
उद्भूता	–	उत्पन्न हुई, जागृत हुई
अस्मात्पूर्वम्	–	इससे पहले
मापयितुम्	–	मापने/नापने के लिये
प्रयतितम्	–	प्रयत्न किया
बहुप्रथिताः	–	बहुत प्रसिद्ध
अशेषे	–	सम्पूर्ण
निर्मीयन्ते स्म	–	बनाए जाते थे

निर्मातारः	–	बनाने वाले
गजधरः	–	गज (लंबाई, चौड़ाई, गहराई, मोटाई मापने की लोहे की छड़) को धारण करने वाला व्यक्ति
तडागनिर्मातॄणाम्	–	तालाब बनाने वालों के
त्रिहस्तपरिमाणात्मिकीम्	–	तीन हाथ के नाप की
लौहयष्टिम्	–	लोहे की छड़
समादृताः	–	आदर को प्राप्त
गाम्भीर्यम्	–	गहराई
वास्तुकाराः	–	भवन आदि का निर्माण करने वाले
कामम्	–	चाहे, भले ही
निभालयन्ति स्म	–	निभाते थे
आधृतानि	–	आधारित
आकलयन्ति स्म	–	अनुमान करते थे
उपकरणसम्भारान्	–	साधन सामग्री को
संगृह्णन्ति स्म	–	संग्रह करते थे
प्रतिदाने	–	बदले में
याचन्ते स्म	–	माँगते थे
अतिरिच्य	–	अतिरिक्त

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) कस्य राज्यस्य भागेषु गजधरः शब्दः प्रयुज्यते?

(ख) गजपरिमाणं कः धारयति?

(ग) कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य गजधरेभ्यः किं प्रदीयते स्म?

(घ) के शिल्पिरूपेण न समादृताः भवन्ति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) तडागाः कुत्र निर्मीयन्ते स्म?

(ख) गजधराः कस्मिन् रूपे परिचिताः?

(ग) गजधराः किं कुर्वन्ति स्म?

(घ) के सम्माननीयाः?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्न-निर्माणं कुरुत-

(क) सुरक्षाप्रबन्धनस्य दायित्वं गजधराः निभालयन्ति स्म।

(ख) तेषां स्वामिनः असमर्थाः सन्ति।

(ग) कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य सम्मानमपि प्राप्नुवन्ति।

(घ) गजधरः सुन्दरः शब्दः अस्ति।

(ङ) तडागाः संसारसागराः कथ्यन्ते।

4. अधोलिखितेषु यथापेक्षितं सन्धिं/विच्छेदं कुरुत-

(क) अद्य + अपि = ...

(ख) ..... + ... = स्मरणार्थम्

(ग) इति + अस्मिन् = ...

(घ) ..... + ... = एतेष्वेव

(ङ) सहसा + एव = ...

5. मञ्जूषातः समुचितानि पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

रचयन्ति	गृहीत्वा	सहसा	जिज्ञासा	सह

(क) छात्राः पुस्तकानि ..... विद्यालयं गच्छन्ति।

(ख) मालाकाराः पुष्पैः मालाः .....।

(ग) मम मनसि एका ..... वर्तते।

(घ) रमेशः मित्रैः ..... विद्यालयं गच्छति।

(ङ) ..... बालिका तत्र अहसत।

6. पदनिर्माणं कुरुत-

	धातुः		प्रत्ययः		पदम्
यथा-	कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्
	हृ	+	तुमुन्	=	.....
	तृ	+	तुमुन्	=	.....
यथा-	नम्	+	क्त्वा	=	नत्वा
	गम्	+	क्त्वा	=	.....
	त्यज्	+	क्त्वा	=	.....
	भुज्	+	क्त्वा	=	.....

	उपसर्गः	धातुः	प्रत्ययः	=	पदम्
यथा-	उप	गम्	ल्यप्	=	उपगम्य
	सम्	पूज्	ल्यप्	=	.....
	आ	नी	ल्यप्	=	.....
	प्र	दा	ल्यप्	=	.....

7. कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु समुचितां विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरय

यथा- विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय)

(क) ..... उभयतः ग्रामाः सन्ति। (ग्राम)

(ख) ..... सर्वतः अट्टालिकाः सन्ति। (नगर)

(ग) धिक् .....। (कापुरुष)

यथा- मृगाः मृगैः सह धावन्ति। (मृग)

(क) बालकाः ..... सह पठन्ति। (बालिका)

(ख) पुत्र ..... सह आपणं गच्छति। (पितृ)

(ग) शिशुः ..... सह क्रीडति। (मातृ)

योग्यता-विस्तारः

अनुपम मिश्र-जल संरक्षण के पारंपरिक ज्ञान को समाज के सामने लाने का श्रेय जि लोगों को है श्री अनुपम मिश्र (जन्म 1948) उनमें अग्रगण्य हैं। 'आज भी खरे तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूँदें' पानी पर उनकी बहुप्रशंसित पुस्तकें हैं।

भाषा-विस्तारः

कारक

सामान्य रूप से दो प्रकार की विभक्तियाँ होती हैं।

1. कारक विभक्ति 2. उपपद विभक्ति।

कारक चिह्नों के आधार पर जहाँ पदों का प्रयोग होता है उसे कारक विभक्ति क हैं। किन्तु किन्हीं विशेष पदों के कारण जहाँ कारक चिह्नों की उपेक्षा कर किसी वि

विभक्ति का प्रयोग होता है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं, जैसे-

सर्वतः अभितः, परितः, धिक् आदि पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

उदा - (क) विद्यालयं परितः पुष्पाणि सन्ति।

(ख) धिक् देशद्रोहिणम्।

सह, साकम्, सार्द्धम्, समं के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

उदा - (क) जनकेन सह पुत्रः गतः।

(ख) दुर्जनेन समं सख्यम्।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा के योग में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है-

उदा - (क) देशभक्ताय नमः।

(ख) नमः एतादृशेभ्यः शिल्पिभ्यः।

(ग) जनेभ्यः स्वस्ति।

अलम् शब्द के दो अर्थ हैं-पर्याप्त एवं मत (वारण के अर्थ में)। पर्याप्त के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे-देशद्रोहिणे अलं देशरक्षकाः।

मना करने के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है, जैसे-अलं विवादेन।

विना के योग में द्वितीया, तृतीया एवं पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं, जैसे-परिश्रमं/परिश्रमेण/परिश्रमात् विना न गतिः।

निम्नलिखित क्रियाओं के एकवचन बनाने का प्रयास करें-

आकलयन्ति, संगृह्णन्ति, प्रस्तुवन्ति।

जिज्ञासा-जानने की इच्छा। इसी प्रकार के अन्य शब्द हैं-पिपासा, जिग्मिषा, विवक्षा, बुभूक्षा।

भाव-विस्तारः

अगर हम ध्यान से देखें तो हमारे चारों तरफ ज्ञान एवं कौशल के विविध रूप दिखाई देते हैं। इसमें कुछ ज्ञान और कौशल फलते-फूलते हैं और कई निरंतर क्षीण होते हैं।

इसके कई उदाहरण हमारे सामने हैं। पानी का व्यवस्थापन संरक्षण और खेती-बाड़ी का पारंपरिक तौर-तरीका, शिल्प तथा कारीगरी का ज्ञान दुर्लभ और विलुप्त होने के कगार पर है। वहीं अभियान्त्रिकी एवं संचार से संबंधित ज्ञान नए उभार पर हैं। दरअसल किस तरह का ज्ञान और कौशल आगे विकसित और प्रगुणित होगा और किस तरह का ज्ञान एवं कौशल पिछड़ेगा, विलुप्त होने के लिए विवश होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि देश और समाज किस तरह के ज्ञान एवं कौशल के विकास में अपना भविष्य सुरक्षित एवं सुखमय मानता है।

परियोजना-कार्यम्

आने वाली छुट्टियों में अपने आस-पास के क्षेत्र के उन पारंपरिक ज्ञान एवं कौशलों का पता लगाएँ जिनका स्थान समाज में अब निरंतर घट रहा है। उन्हें कोई उचित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है या वे विलुप्त होने के कगार पर हैं। उनकी एक सूची भी तैयार करें और उनके लिए प्रयुक्त होने वाले संस्कृत शब्द लिखें। अपने और अपने मित्रों द्वारा तैयार की गई अलग-अलग सूचियों को सामने रखते हुए इन पारंपरिक कौशलों के विलुप्त होने के कारणों का पता लगाएँ।

नवमः पाठः

सप्तभगिन्यः

['सप्तभगिनी' यह एक उपनाम है। उत्तर-पूर्व के सात राज्य विशेष को उक्त उपाधि दी गयी है। इन राज्यों का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त विलक्षण है। इन्हीं के सांस्कृतिक और सामाजिक वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ का सृजन किया गया है।]

प्रत्ययः

अध्यापिका - सुप्रभातम्।

छात्राः - सुप्रभातम्। सुप्रभातम्।

अध्यापिका - भवतु। अद्य किं पठनीयम्?

छात्राः - वयं सर्वे स्वदेशस्य राज्यानां विषये ज्ञातुमिच्छामः।

अध्यापिका - शोभनम्। वदत। अस्माकं देशे कति राज्यानि सन्ति?

सायरा - चतुर्विंशतिः महोदये!

सिल्वी - न हि न हि महाभागे! पञ्चविंशतिः राज्यानि सन्ति।

अध्यापिका - अन्यः कोऽपि....?

स्वरा - *(मध्ये एव)* महोदये! मे भगिनी कथयति यदस्माकं देशे अष्टाविंशतिः राज्यानि सन्ति। एतदतिरिच्य सप्त केन्द्रशासितप्रदेशाः अपि सन्ति।

अध्यापिका - सम्यग्जानाति ते भगिनी। भवतु, अपि जानीथ यूयं यदेतेषु राज्येषु सप्तराज्यानाम् एकः समवायोऽस्ति यः सप्तभगिन्यः इति नाम्ना प्रथितोऽस्ति।

सर्वे - (*साश्चर्यम् परस्परं पश्यन्तः*) सप्तभगिन्यः? सप्तभगिन्यः?

निकोलसः - इमानि राज्यानि सप्तभगिन्यः इति किमर्थं कथ्यन्ते?

अध्यापिका - प्रयोगोऽयं प्रतीकात्मको वर्तते। कदाचित् सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्यानां साम्याद् इमानि उक्तोपाधिना प्रथितानि।

समीक्षा - कौतूहलं मे न खलु शान्तिं गच्छति, श्रावयतु तावद् यत् कानि तानि राज्यानि?

अध्यापिका - शृणुत!

अद्वयं मत्रयं चैव न-त्रि-युक्तं तथा द्वयम्।
सप्तराज्यसमूहोऽयं भगिनीसप्तकं मतम्।।

इत्थं भगिनीसप्तके इमानि राज्यानि सन्ति-अरुणाचलप्रदेशः, असमः मणिपुरम्, मिजोरमः, मेघालयः, नगालैण्डः, त्रिपुरा चेति। यद्यपि क्षेत्रपरिमाणैः इमानि लघूनि वर्तन्ते तथापि गुणगौरवदृष्ट्या बृहत्तराणि प्रतीयन्ते।

सर्वे - कथम्? कथम्?

अध्यापिका - इमाः सप्तभगिन्यः स्वीये प्राचीनेतिहासे प्रायः स्वाधीनाः एव दृष्टाः। न केनापि शासकेन इमाः स्वायत्तीकृताः। अनेक-संस्कृति-विशिष्टायां भारतभूमौ एतासां भगिनीनां संस्कृति महत्त्वाधायिनी इति।

तन्वी - अयं शब्दः सर्वप्रथमं कदा प्रयुक्तः?

अध्यापिका - श्रुतमधुरशब्दोऽयं सर्वप्रथमं विगतशताब्दस्य द्विसप्ततितमे वर्षे त्रिपुराराज्यस्योद्घाटनक्रमे केनापि प्रवर्तितः। अस्मिन्नेव काले एतेषां राज्यानां पुनः सङ्घटनं विहितम्।

स्वरा - अन्यत् किमपि वैशिष्ट्यमस्ति एतेषाम्?

अध्यापिका - नूनम् अस्ति एव। पर्वत-वृक्ष-पुष्प-प्रभृतिभिः प्राकृतिकसम्पद्भिः सुसमृद्धानि सन्ति इमानि राज्यानि। भारतवृक्षे च पुष्प- स्तबकसदृशानि विराजन्ते एतानि।

राजीवः - भवति! गृहे यथा सर्वाधिका रम्या मनोरमा च भगिनी भवति तथैव भारतगृहेऽपि सर्वाधिकाः रम्याः इमाः सप्तभगिन्यः सन्ति।

अध्यापिका - मनस्यागता ते इयं भावना परमकल्याणमयी परं सर्वे न तथा अवगच्छन्ति। अस्तु, अस्ति तावदेतेषां विषये किञ्चिद् वैशिष्ट्यमपि कथनीयम्। सावहितमनसा श्रृणुत-

जनजातिबहुलप्रदेशोऽयम्। गारो-खासी-नगा-मिजो-प्रभृतयः बहवः जनजातीयाः अत्र निवसन्ति। शरीरेण ऊर्जस्विनः एतत्प्रादेशिकाः बहुभाषाभिः समन्विताः, पर्वपरम्पराभिः परिपूरिताः, स्वलीला-कलाभिश्च निष्णाताः सन्ति।

मालती - महोदये! तत्र तु वंशवृक्षा अपि प्राप्यन्ते?

अध्यापिका - आम्। प्रदेशेऽस्मिन् हस्तशिल्पानां बाहुल्यं वर्तते। आ वस्त्राभूषणेभ्यः गृहनिर्माणपर्यन्तं प्रायः वंशवृक्षनिर्मितानां वस्तूनाम् उपयोगः क्रियते। यतो हि अत्र वंशवृक्षाणां प्राचुर्यं विद्यते। साम्प्रतं वंशोद्योगोऽयं अन्ताराष्ट्रियख्यातिम् अवाप्तोऽस्ति।

अभिनवः - भगिनीप्रदेशोऽयं बह्वाकर्षकः ज्ञायते।

सलीमः - किं भ्रमणाय भगिनीप्रदेशोऽयं समीचीनः?

सर्वे छात्राः - (उच्चैः) महोदये! आगामिनि अवकाशे वयं तत्रैव गन्तुमिच्छामः।

स्वरा - भवत्यपि अस्माभिः सार्द्धं चलतु।

अध्यापिका - रोचते मेऽयं विचारः। एतानि राज्यानि तु भ्रमणार्थं स्वर्गसदृशानि इति।

बाढम्	–	बहुत अच्छा
पठनीयम्	–	पढ़ना है
ज्ञातुम्	–	जानने के लिए
कति	–	कितने
चतुर्विंशतिः	–	चौबीस
पञ्चविंशतिः	–	पचीस
भगिनी	–	बहन
अष्टाविंशतिः	–	अठाईस
केन्द्रशासितप्रदेशाः	–	केन्द्र द्वारा शासित प्रदेश
अतिरिच्य	–	अतिरिक्त
भवतु	–	अच्छा
समवायः	–	समूह
प्रथितः	–	प्रसिद्ध
प्रतीकात्मकः (प्रतीक+आत्मकः)	–	साङ्केतिक
कदाचित्	–	सम्भवतः
साम्याद्	–	समानता के कारण
उक्तोपाधिना (उक्त+उपाधिना)	–	कही गयी उपाधि से/के कारण
नाम्नि	–	नाम में
संशयः	–	सन्देह

अपरतः	–	दूसरी ओर
क्षेत्रपरिमाणैः	–	क्षेत्रफल से
लघूनि	–	छोटे
गुणगौरवदृष्ट्या	–	गुण एवं गौरव की दृष्टि से
बृहत्तराणि	–	बड़े
स्वाधीनाः (स्व+अधीनाः)	–	स्वतन्त्र
स्वायत्तीकृताः	–	अपने अधीन किये गये
महत्त्वाधायिनी (महत्त्व+आधायिनी)	–	महत्त्व को रखने वाली, महत्त्वपूर्ण
श्रुतमधुरशब्दः	–	सुनने में मधुर शब्द
प्रभृतिभिः	–	आदि से
विहितम्	–	विधिपूर्वक किया गया
प्राकृतिकसम्पद्भिः	–	प्राकृतिक सम्पदाओं से
सुसमृद्धानि	–	बहुत समृद्ध
भारतवृक्षे	–	भारत रूपी वृक्ष में/पर
पुष्पस्तबकसदृशानि	–	पुष्प के गुच्छे के समान
हृद्या	–	प्रिय (हृदय को प्रिय लगने वाली) मनोरम
रम्या	–	रमणीय
सावहितमनसा	–	सावधान मन से
ऊर्जस्विनः	–	ऊर्जा युक्त
पर्वपरम्पराभिः	–	पर्वों की परम्परा से
परिपूरिताः	–	पूर्ण, भरे-पूरे
समभिनन्दनीयम्	–	स्वागत योग्य

समीचीनः	–	बहुत अच्छा
स्वलीलाकलाभिः	–	अपनी क्रिया एवं कलाओं से
निष्णाताः	–	पारङ्गत, निपुण
वंशवृक्षनिर्मितानाम्	–	बाँस के वृक्षों से निर्मित
अवाप्तः	–	प्राप्त
बह्वाकर्षकः (बहु+आकर्षकः)	–	अत्यन्त आकर्षक/अत्यधिक आकर्षक

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत-

सुप्रभातम्	महत्त्वाधायिनी	पर्वपरम्पराभिः
चतुर्विंशतिः	द्विसप्ततितमे	वंशवृक्षनिर्मितानाम्
सप्तभगिन्यः	प्राकृतिकसम्पद्भिः	वंशोद्योगोऽयम्
गुणगौरवदृष्ट्या	पुष्पस्तबकसदृशानि	अन्ताराष्ट्रियख्यातिम्

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) अस्माकं देशे कति राज्यानि सन्ति?

(ख) प्राचीनेतिहासे काः स्वाधीनाः आसन्?

(ग) केषां समवायः 'सप्तभगिन्यः' इति कथ्यते?

(घ) अस्माकं देशे कति केन्द्रशासितप्रदेशाः सन्ति?

(ङ) सप्तभगिनी-प्रदेशे कः उद्योगः सर्वप्रमुखः?

3. अधोलिखितपदेषु प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत-

पदानि	प्रकृतिः		प्रत्ययः
यथा-गन्तुम्	गम्	+	तुमुन्
ज्ञातुम्	.....	+	.....

ग्रहीतुम्	.....	+	.....
पातुम्	.....	+	.....
श्रोतुम्	.....	+	.....
भ्रमितुम्	.....	+	.....

4. पाठात् चित्वा तद्भवपदानां कृते संस्कृतपदानि लिखत-

तद्भव-पदानि	संस्कृत-पदानि
यथा-सात	सप्त
बहिन	.....
संगठन	.....
बाँस	.....
आज	.....
खेत	.....

5. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

(क) गच्छति, पठति, धावति, अहसत्, क्रीडति।

(ख) छात्रः, सेवकः, शिक्षकः, लेखिका, क्रीडकः।

(ग) पत्रम्, मित्रम्, पुष्पम्, आम्रः, नक्षत्रम्।

(घ) व्याघ्रः, भल्लूकः, गजः, कपोतः, वृषभः, सिंहः।

(ङ) पृथिवी, वसुन्धरा, धरित्री, यानम्, वसुधा।

6. मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

सन्ति	अस्ति	प्रतीयन्ते	वर्तते	इच्छामि	निवसन्ति	वर्तन्ते

(क) अयं प्रयोगः प्रतीकात्मकः .....।

(ख) सप्त केन्द्रशासितप्रदेशाः .....।

(ग) अत्र बहवः जनजातीयाः .....।

(घ) अहं किमपि श्रोतुम् .....।

(ङ) तत्र हस्तशिल्पिनां बाहुल्यं .....।

(च) सप्तभगिनीप्रदेशाः रम्याः हृद्या च .....।

(छ) गुणगौरवदृष्ट्या इमानि वृहत्तराणि .....।

7. विशेष्य-विशेषणानाम् उचितं मेलनम् कुरुत-

विशेष्य-पदानि	विशेषण-पदानि
अयम्	संस्कृतिः
संस्कृतिविशिष्टायाम्	इतिहासे
महत्त्वाधायिनी	प्रदेशः
प्राचीने	समवायः
एकः	भारतभूमौ

योग्यता-विस्तारः

* **अद्वयं मत्रयं चैव न-त्रि-युक्तं तथा द्वयम्।**
सप्तराज्यसमूहोऽयं भगिनीसप्तकं मतम्॥

यह राज्यों के नामों को याद रखने का एक सरल तरीका है। इसका अर्थ है अ से आरम्भ होने वाले दो, म से आरम्भ होने वाले तीन, न से नगालैण्ड और त्रि से त्रिपुरा का बोध होता है। इसी प्रकार अठारह पुराणों के नाम याद रखने के लिये यह श्लोक प्रसिद्ध है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अ-ना-प-लिंग-कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥

* 'सप्तभगिनी' इस उपनाम का सर्वप्रथम प्रयोग 1972 में श्री ज्योति प्रसाद सैकिया ने आकाशवाणी के साथ भेंटवार्ता के क्रम में किया था।

* इनके अन्तर्गत आने वाले राज्यों का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है यथा-महाभारत, रामायण, पुराण आदि।
* इन राज्यों की राजधानी क्रमशः इस प्रकार है-

अरुणाचल प्रदेश	-	इटानगर
असम	-	दिसपुर
मणिपुर	-	इम्फाल
मिजोरम	-	ऐजोल
मेघालय	-	शिलाङ्ग
नगालैण्ड	-	कोहिमा
त्रिपुरा	-	अगरतल्ला

* बिहू, मणिपुरी, नानक्रम आदि इस प्रदेश के प्रमुख नृत्य हैं।
* नगा, मिजो, खासी, असमी, बांग्ला, पदम, बोडो, गारो, जयन्तिया आदि यहाँ की प्रमुख भाषाएँ हैं।

सप्तसंख्या पर कुछ अन्य प्रचलित नाम हैं-

सप्तसिन्धु -'सप्तभगिनी' के समान सप्तसिन्धु भी हैं। ये सप्तसिन्धु हैं-सिन्धु, शुतुद्री (सतलज), इरावती (इरावदी), वितस्ता (झेलम), विपाशा (व्यास), असिक्नी (चिनाब) और सरस्वती।

सप्तपर्वत - महेन्द्र, मलय, हिमवान्, अर्बुद, विन्ध्य, सह्याद्रि, श्रीशैल।

सप्तर्षि - मरीचि, पुलस्त्य, अंगिरा, क्रतु, अत्रि, पुलह, वसिष्ठ।

कृष्णनाथ की पुस्तक अरुणाचल यात्रा (वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर 2002) पठनीय है।

परियोजना-कार्यम्

पाठ में स्थित अद्वयं ..... वाली पहेली से सातों राज्यों के नाम को समझो।

दशमः पाठः

अशोकवनिका

[प्रस्तुत पाठ आदिकवि वाल्मीकिकृत रामायण के सुन्दरकाण्ड के पन्द्रहवें सर्ग से संगृहीत है। सीता की खोज में हनुमान लङ्का में प्रविष्ट होते हैं तथा वहीं रावण के प्रसिद्ध उद्यान अशोक-वनिका की शोभा का आह्लादक दर्शन करते हैं। यह अशोकवनिका दिव्य/अद्वितीय सौरभ, स्वाद, सौन्दर्य एवं विविध वर्णों से युक्त कुसुमों, लताओं वृक्षों आदि से सुशोभित है। इसी का वर्णन प्रस्तुत पाठ में है।]

सर्वनाम, तत्, एतत्-प्रयोगः

सर्वर्तुकुसुमै रम्यैः फलवद्भिश्च पादपैः।
पुष्पितानामशोकानां श्रिया सूर्योदयप्रभाम् ॥1॥

कर्णिकारैः कुसुमितैः किंशुकैश्च सुपुष्पितैः।
स देशः प्रभया तेषां प्रदीप्त इव सर्वतः ॥2॥

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा।
विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः ॥3॥

नन्दनं विबुधोद्यानं चित्रं चैत्ररथं यथा।
अतिवृत्तमिवाचिन्त्यं दिव्यं रम्यश्रियावृतम् ॥4॥

सर्वर्तुपुष्पैर्निचितं पादपैर्मधुगन्धिभिः।
नानानिनादैरुद्यानं रम्यं मृगगणद्विजैः ॥5॥

अनेकगन्धप्रवहं पुण्यगन्धं मनोहरम्।
शैलेन्द्रमिव गन्धाढ्यं द्वितीयं गन्धमादनम् ॥6॥

अशोकवनिकायां तु तस्यां वानरपुंगवः।
स ददर्शाविदूरस्थं चैत्यप्रासादमूर्जितम् ॥7॥

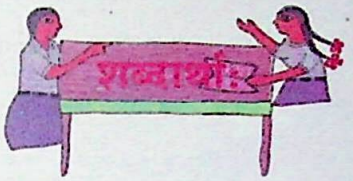

सर्वर्तुकुसुमैः (सर्व+ऋतुकुसुमैः)	–	सभी ऋतुओं के फूलों से
पादपैः	–	वृक्षों से
सूर्योदयप्रभाम् (सूर्य+उदयप्रभाम्)	–	सूर्योदय की छटा
श्रिया	–	शोभा से
कर्णिकारैः	–	कनेर के फूलों से
किंशुकैः	–	टेसू/पलाश के फूलों/पेड़ों से
प्रभया	–	छटा से
पुंनागा	–	सफेद कमल/नागकेसर नाम का वृक्ष।
सप्तपर्णाश्चः (सप्तपर्णाः+च)	–	और 'सप्तपर्ण' नाम का एक वृक्ष छितवन
चम्पकोद्दालकाः (चम्पक+उद्दालकाः)	–	चम्पा एवं उद्दालक नामक पौधा/फूल
विबुधोद्यानम् (विबुध+उद्यानम्)	–	देवताओं का उद्यान
चैत्ररथम्	–	कुबेर के उद्यान का नाम
नन्दनम्	–	स्वर्ग का उद्यान
नानानिनादैः	–	अनेक प्रकार की ध्वनियों से
मृगगणद्विजैः	–	पशुओं एवं चिड़ियों से

पुण्यगन्धम्	–	पवित्र/शुद्ध गन्ध वाला
शैलेन्द्रम् (शैल+इन्द्रम्)	–	पहाड़ों का राजा (हिमालय)
गन्धमादनम्	–	'गन्धमादन' नाम का एक पहाड़
अशोकवनिकायाम्	–	अशोक वनिका में
वानरपुंगवः	–	बन्दरों में श्रेष्ठ (हनुमान)
ऊर्जितम्	–	चकाचौंध से युक्त

अभ्यासः

1. अधोलिखितानि पदानि उच्चारयत-

सर्वर्तुकुसुमैः	सर्वर्तुपुष्पैः	कर्णिकारैः
मृगगणद्विजैः	फलवद्भिश्च	पादपैर्मधुगन्धिभिः
सप्तपर्णाश्च	चम्पकोद्दालकाः	विबुधोद्यानम्
ददर्शाविदूरस्थम्	प्रासादमूर्जितम्	किंशुकैश्च

2. पाठान्तर्गतान् सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।

3. श्लोकेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अशोक ..... तु तस्यां वानर .....।

स ददर्शाविदूरस्थं ..... प्रासादमूर्जितम्।।

(ख) कर्णिकारैः किंशुकैश्च .....।

स देशः ..... तेषां प्रदीप्त इव .....।

4. श्लोकांशान् योजयत-

क	ख
नन्दनं विबुधोद्यानं	पुण्यगन्धं मनोहरम्।
अनेकगन्धप्रवहं	प्रदीप्त इव सर्वतः।
स देशः प्रभया तेषां	चित्रं चैत्ररथं यथा।
पुंनागाः सप्तपर्णाश्च	रम्यं मृगगणद्विजैः।
नानानिनादैरुद्यानं	चम्पकोद्दालकास्तथा।

5. निर्देशानुसारं 'तत्' इति शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

		विभक्तः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(क) यथा-	पुँल्लिङ्गे	प्रथमा	सः	.....	.....
		षष्ठी	तस्य	.....	.....
		सप्तमी	.....	.....	तेषु
(ख) यथा-	स्त्रीलिङ्गे	षष्ठी	.....	तयोः	.....
		द्वितीया	ताम्	.....	.....
		तृतीया	.....	ताभ्याम्	.....
(ग) यथा-	नपुंसकलिङ्गे	प्रथमा	तत्	.....	तानि
		द्वितीया	.....	.....	.....
		चतुर्थी	तस्मै	.....	.....

6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) पाठेऽस्मिन् देशः इति शब्दस्य कोऽर्थः?

(ख) केषाञ्चित् पञ्च पुष्पाणां नामानि लिखत।

(ग) वानरपुंगवः किं ददर्श?

(घ) अत्र वानरपुङ्गवः कः?

(ङ) उद्यानम् कैः निनादैः रम्यम्?

7. चक्रस्थपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

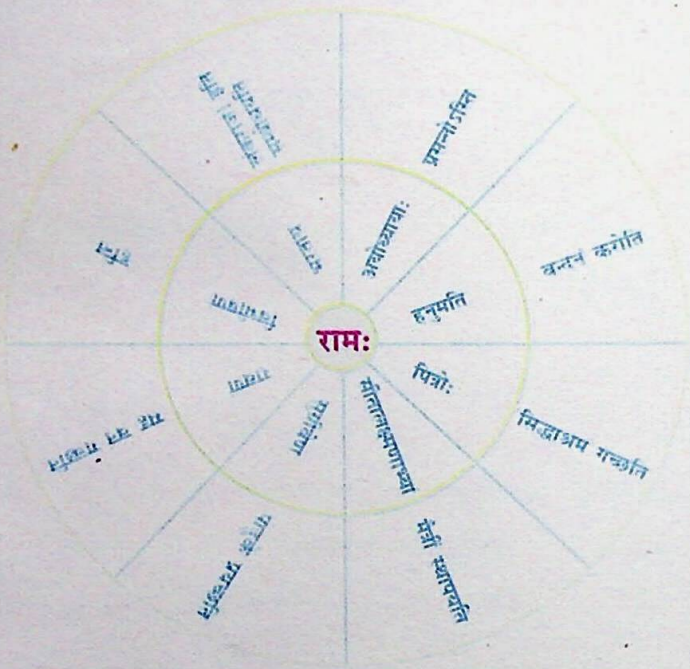

यथा-रामः सीतालक्ष्मणाभ्यां सह वनं गच्छति।

(क) रामः .....।

(ख) ..... ।

(ग) ..... ।

(घ) ..... ।

(ङ) ..... ।

(च) ..... ।

(छ) ..... ।

8. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एताम्	एषा	एते	एतानि	एषः	एताः

यथा- अध्ययने एषः बालः अद्वितीयः अस्ति।

(क) ..... बाला विद्यालयात् गृहं गच्छति।

(ख) उद्याने ..... पुष्पाणि विकसितानि सन्ति।

(ग) पिता ..... लेखनीं मह्यम् आपणात् आनयत्।

(घ) अहम् ..... फले तुभ्यं ददामि।

(ङ) ..... बालिकाः मधुराणि गीतानि गायन्ति।

योग्यता-विस्तारः

ग्रन्थ परिचय-'रामायण' केवल लौकिक संस्कृत का ही नहीं अपितु विश्व का आदि काव्य है। 'रामायणम् आदिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।' इसमें सात काण्ड हैं तथा यह चौबीस हजार श्लोकों से युक्त है। 'चतुर्विंश सहस्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः।'

* रामायण का सबसे अच्छा काण्ड सुन्दरकाण्ड माना जाता है। कई प्रदेशों में इस काण्ड के नियमित पाठ की परम्परा है। सुन्दरकाण्ड के विषय में एक लोक प्रचलित कथन प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है-

सुन्दरे सुन्दरो रामः सुन्दरे सुन्दरी कथा।
सुन्दरे सुन्दरी सीता सुन्दरे किं न सुन्दरम्।

* अशोक-वनिका दशानन रावण का उद्यान था जिसमें अपहरण के बाद सीता को छिपा कर रखा गया था।

परियोजना-कार्यम्

भारतवर्ष के कुछ प्रसिद्ध बागों अथवा उद्यानों की सूची बनाएँ, यथा-शालीमार एवं निशात।

एकादशः पाठः

सावित्री बाई फुले

[शिक्षा हमारा अधिकार है। हमारे समाज में कई समुदाय इससे लम्बे समय तक वञ्चित रहे हैं। उन्हें इस अधिकार को पाने के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा है। लड़कियों को तो और ज्यादा अवरोध झेलना पड़ता रहा है। प्रस्तुत पाठ इस संघर्ष का नेतृत्व करने वाली सावित्री बाई फुले के योगदान पर केन्द्रित है।]

उपरि निर्मितं चित्रं पश्यत। इदं चित्रं कस्याश्चित् पाठशालायाः वर्तते। इयं सामान्या पाठशाला नास्ति। इयमस्ति महाराष्ट्रस्य प्रथमा कन्यापाठशाला। एका शिक्षिका गृहात् पुस्तकानि आदाय चलति। मार्गे कश्चित् तस्याः उपरि धूलिं कश्चित् च प्रस्तरखण्डान् क्षिपति। परं सा स्वदृढनिश्चयात् न विचलति। स्वविद्यालये कन्याभिः सविनोदम् आलपन्ती सा अध्यापने संलग्ना भवति। तस्याः स्वकीयम् अध्ययनमपि सहैव प्रचलति। केयं

महिला? अपि यूयमिमां महिलां जानीथ? इयमेव महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले नामधेया।

जनवरी मासस्य तृतीये दिवसे 1831 तमे खिस्ताब्दे महाराष्ट्रस्य नायगांव-नाम्नि स्थाने सावित्री अजायत। तस्याः माता लक्ष्मीबाई पिता च खंडोजी इति अभिहितौ। नववर्षदेशीया सा ज्योतिबा फुले महोदयेन परिणीता। सोऽपि तदानीं त्रयोदशवर्षकल्पः एव आसीत्। यतोहि सः स्त्रीशिक्षायाः प्रबलः समर्थकः आसीत् अतः सावित्र्याः मनसि स्थिता अध्ययनाभिलाषा उत्सं प्राप्तवती। इतः परं सा साग्रहम् आङ्ग्लभाषाया अपि अध्ययनं कृतवती।

1848 तमे खिस्ताब्दे पुणे नगरे सावित्री ज्योतिबामहोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत। तदानीं सा केवलं सप्तदशवर्षीया आसीत्। 1851 तमे खिस्ताब्दे अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बालिकानां कृते पृथक्तया तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः।

सामाजिककुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत्। विधवानां शिरोमुण्डनस्य निराकरणाय सा साक्षात् नापितैः मिलिता। फलतः केचन नापिताः अस्यां रूढौ सहभागिताम् अत्यजन्। एकदा सावित्र्या मार्गे दृष्टं यत् कूपं निकषा शीर्णवस्त्रावृताः तथाकथिताः निम्नजातीयाः काश्चित् नार्यः जलं पातुं याचन्ते स्म। उच्चवर्गीयाः उपहासं कुर्वन्तः कूपात् जलोद्धरणम् अवारयन्। सावित्री एतत् अपमानं सोढुं नाशक्नोत्। सा ताः स्त्रियः निजगृहं नीतवती। तडागं दर्शयित्वा अकथयत् च यत् यथेष्टं जलं नयत। सार्वजनिकोऽयं तडागः। अस्मात् जलग्रहणे नास्ति जातिबन्धनम्। तया मनुष्याणां समानतायाः स्वतन्त्रतायाश्च पक्षः सर्वदा सर्वथा समर्थितः।

'महिला सेवामण्डल' 'शिशुहत्या प्रतिबन्धक गृह' इत्यादीनां संस्थानां स्थापनायां फुलेदम्पत्योः अवदानम् महत्वपूर्णम्। सत्यशोधकमण्डलस्य गतिविधिषु अपि सावित्री

अतीव सक्रिया आसीत्। अस्य मण्डलस्य उद्देश्यम् आसीत् उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारान् प्रति जागरणम् इति।

सावित्री अनेकाः संस्थाः प्रशासनकौशलेन सञ्चालितवती। दुर्भिक्षकाले प्लेग-काले च सा पीडितजनानाम् अश्रान्तम् अविरतं च सेवाम् अकरोत्। सहायता- सामग्री-व्यवस्थायै सर्वथा प्रयासम् अकरोत्। महारोगप्रसारकाले सेवारता सा स्वयम् असाध्यरोगेण ग्रस्ता 1897 तमे ख्रिस्ताब्दे निधनं गता।

साहित्यरचनया अपि सावित्री महीयते। तस्याः काव्यसङ्कलनद्वयं वर्तते 'काव्यफुले' 'सुबोधरत्नाकर' चेति। भारतदेशे महिलोत्थानस्य गहनावबोधाय सावित्रीमहोदयायाः जीवनचरितम् अवश्यम् अध्येतव्यम्।

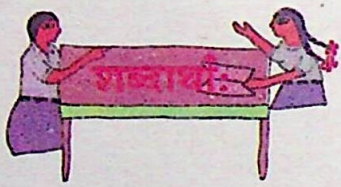

आदाय	–	लेकर
प्रस्तरखण्डान्	–	पत्थर के टुकड़ों को
सविनोदम्	–	हँसी मजाक के साथ
आलपन्ती	–	बात करती हुई
अजायत	–	पैदा हुई
अभिहितौ	–	कहे गये हैं
परिणीता	–	ब्याही गयी
अस्पृश्यतया	–	छुआछूत के कारण
प्रारब्धः	–	आरम्भ किया
प्रताडनशीलानाम्	–	प्रताड़ित करनेवाली

निराकरणाय	–	दूर करने के लिए
रूढौ	–	रूढ़ि में, रिवाज में
शीर्ण	–	फटा-पुराना, चिथड़ा
पातुम्	–	पीने के लिए
सोढुम्	–	सहने में
उत्पीडितानाम्	–	सताए गए का
अश्रान्तम्	–	बिना थके हुए
महीयते	–	बढ़-चढ़कर हैं
पद्यबद्धम्	–	कविता के रूप में
गहनावबोधाय (गहन+अवबोधाय)	–	गहराई से समझने के लिए

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका का आसीत्?

(ख) कस्य समुदायस्य बालिकानां कृते सावित्री अपरं विद्यालयं प्रारब्धवती?

(ग) कीदृशीनां कुरीतीनां सावित्री विरोधम् अकरोत्।

(घ) किमर्थं शीर्णवस्त्रावृताः नार्यः कूपात् जलं ग्रहीतुं वारिताः?

(ङ) सावित्र्याः मृत्युः कथम् अभवत्?

(च) तस्याः द्वयोः काव्यसङ्कलनयोः नामनी के?

2. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

स्वकीयम् - .....

सविनोदम् - .....

सक्रिया - .....

प्रदेशस्य - .....

मुखरम् - .....

सर्वथा - .....

3. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि लिखत-

उपरि .....

आदानम् .....

परकीयम् .....

विषमता .....

व्यक्तिगतम् .....

आरोहः .....

4. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं, विभक्तिं, वचनं च लिखत-

पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
धूलिम्	.....	.....	.....
नाम्नि	.....	.....	.....
अपरः	.....	.....	.....
कन्यानाम्	.....	.....	.....
सहभागिताम्	.....	.....	.....
नापितैः	.....	.....	.....

5. उदाहरणमनुसृत्य लकारपरिवर्तनं कुरुत-

	वर्तमानकालः	अतीतकालः
यथा -	सा शिक्षिका अस्ति।	सा शिक्षिका आसीत्।

(क) सा अध्यापने संलग्ना भवति।

(ख) सः त्रयोदशवर्षकल्पः अस्ति।

(ग) महिलाः तडागात् जलं नयन्ति।

(घ) वयं प्रतिदिनं पाठं पठामः।

(ङ) यूयं किं विद्यालयं गच्छथ?

(च) ते बालकाः विद्यालयात् गृहं गच्छन्ति।

द्वादशः पाठः

कः रक्षति कः रक्षितः

[प्रस्तुत पाठ पर्यावरण पर केन्द्रित है। हमारे जीवन में प्लास्टिक का इस सीमा तक प्रवेश हो चुका है कि हम इसके बिना दैनिक जीवन चलाने की कल्पना भी नहीं कर पाते जबकि प्लास्टिक पर्यावरण के लिए घातक है। प्लास्टिक के बढ़ते हुए उपयोग पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए इस पाठ में पर्यावरण तथा प्रदूषण की समस्या के प्रति संवेदनशील समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है।]

(काश्चन बालिकाः भ्रमणाय निर्गताः परस्परमालपन्ति)

रिपञ्ची - परमिन्दर्! परमिन्दर्! एहि आगच्छ, उपवनं प्रविशामः।

परमिन्दर् - अरे! उपवनस्य द्वारे एव प्लास्टिकस्यूतकानि क्षिप्तानि इतस्ततः विकीर्णानि।

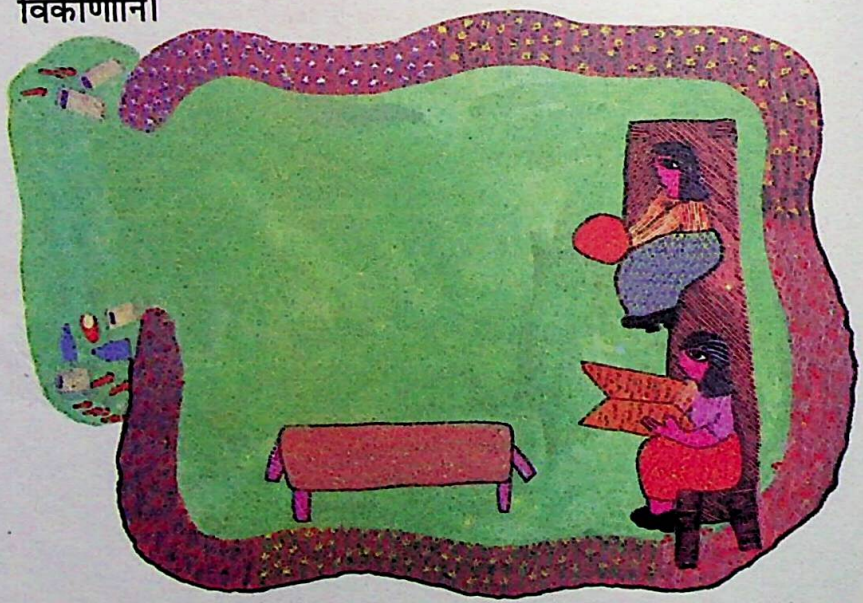

कचनार् - जनाः प्रमादं कुर्वन्ति। प्लास्टिकपुटकेषु खाद्यवस्तूनि गृहीत्वा भक्षयन्ति, परं तानि पुटकानि मार्गे यत्र कुत्रापि क्षिपन्ति।

रोजलिन् - महती इयं समस्या। अपि प्रविशामः?

रिपञ्ची - अस्तु प्रविशामः।

(*सर्वाः उपवने प्रविशन्ति।*)

कचनार् - कुत्र उपविशामः?

रिपञ्ची - अस्मिन् काष्ठपीठे उपविशामः।

(*सर्वाः उपविशन्ति*)

रिपञ्ची - अपि पश्यथ, वयं यत्रोपविष्टाः तत्र कानि वस्तूनि सन्ति?

परमिन्दर् - आम्। आम्। बहूनि वस्तूनि परितो विकीर्णानि।

कचनार् - यथा स्यूतः, जलकूपी, कन्दुकम् इत्यादीनि।

रोजलिन् – हला, आत्मानमपि पश्य।

चेनम्मा – आम्। आम्। पश्यामि एव। मम सविधे कङ्कतम्, कुण्डलम्, केशबन्धः, घटिपट्टिका, कङ्कणम् इत्यादीनि सर्वाणि विराजन्ते। किमसि वक्तुकामा?

रिपञ्ची – इदं ध्यातव्यं यद् एतानि सर्वाणि वस्तूनि प्रायः प्लास्टिकेन निर्मितानि सन्ति।

कचनार् – पूर्वं तु प्रायः कार्पासेन, चर्मणा, लौहेन, लाक्षया, मृत्तिकया काष्ठेन वा निर्मितानि वस्तूनि एव प्राप्यन्ते स्म। अधुना तत् स्थाने प्लास्टिक-निर्मितानि वस्तूनि परितः विकीर्णानि सन्ति। एतानि अल्पमूल्यानि अपि सन्ति।

चेनम्मा – अहो! कलमस्तु विस्मृतः। कोऽपि एतत् अनुमातुं शक्नोति यत् एकस्मिन् कलमे कति मसियष्टयः प्रयुज्यन्ते।

परमिन्दर् – अनुमीयते यत् प्रत्येकं छात्रा प्रतिसप्ताहं स्वकलमे एकां मसियष्टिं पूरयति। तात्पर्यम् इदमस्ति यत् एकस्मिन्नेव वर्षे न्यूनान्न्यूनं प्रायः पञ्चाशत् मसियष्टयः तया प्रयुक्ताः भवन्ति।

चेनम्मा – परं किं वयम् एकस्मिन् वर्षे एकस्यैव कलमस्य प्रयोगं कुर्मः?

सामूहिकस्वरः – नहि नहि। वर्षे तु प्रायशः बहवः कलमाः विलुप्यन्ते।

रिपञ्ची – एका छात्रा त्रिषु मासेषु एकं कलमं क्रीणाति। अर्थात् एकस्मिन् वर्षे चतुरः कलमान् क्रीणाति।

रोजलिन् – अपरं च कलमेन सह मसियष्टिः अपि प्लास्टिकावरणे समावेश्यते। तर्हि आहत्य प्रतिवर्षम् एका छात्रा प्रायः पञ्चाशन्मसियष्टीनां चतुर्भिः कलमैः चतुःपञ्चाशद्भिः आवरणैः प्रयोगं करोति।

कचनार् – भवतु, बहुधा प्रयुक्तस्य प्लास्टिकस्य दूरगामिनः घातकाः परिणामाः वयं न द्रष्टुं शक्नुमः। प्लास्टिकं कदापि न गलति, न च अपक्षीयते। यथा-अन्यानि वस्तूनि विनश्य मृत्तिकायां विलीयन्ते।

चेनम्मा – प्लास्टिकस्य मृत्तिकायां लयाभावात् अस्माकं पर्यावरणस्य कृते महती क्षतिः भवति।

रिपञ्ची – एकेन पदार्थेन अपरः पदार्थः सृज्यते, अथवा विनष्टं वस्तु मृत्तिकायां मिलति। परं प्लास्टिके इयं प्रक्रिया असम्भवा एव।

परमिन्दर् – कल्पयतु, यदि शतं वर्षाणि यावत् प्लास्टिक-निर्मितानां पदार्थानां निर्माणप्रक्रिया पृथिव्यां प्रचलिष्यति तर्हि किं स्यात्? (*सर्वाः सखेदं विमृशन्ति।*)

रोजलिन् – अत्र विषादेन किम्? सर्वप्रथमं तु शिक्षकाणां सहयोगेन प्लास्टिकस्य विविधपक्षाः विचारणीयाः। अस्माकं प्रयासोऽपि पर्यावरणस्य रक्षणे अपेक्षितः।

काश्चन (काः+चन)	–	कुछ
चर्चयन्ति	–	चर्चा करते हैं
पुटकेषु	–	छोटी थैली (पाउच)
स्यूतः	–	थैला/थैली
जलकूपी	–	पानी की बोतल
हला	–	सखी के लिए सम्बोधन

कङ्कतम्	–	कंघा/कंघी
कङ्कणम्	–	कंगन
कार्पासेन	–	कपास से
लाक्षया	–	लाख से
मृत्तिकया	–	मिट्टी से
विकीर्णानि	–	बिखरी हुई/फैली हुई
प्रमादम्	–	आलस्य
काष्ठपीठे	–	लकड़ी की बैंच पर
आहत्य	–	कुल मिलाकर
मसियष्ट्या	–	रिफिल से
न्यूनान्न्यूनम् (न्यूनात्+न्यूनम्)	–	कम से कम
प्रायशः	–	प्रायः, लगभग
विलुप्यन्ते	–	लुप्त हो जाते हैं
अपक्षीयते	–	नष्ट हो जाता है
विलीयन्ते	–	विलीन हो जाते हैं
लयाभावात् (लय+अभावात्)	–	लीन/नष्ट न होने के कारण
सृज्यते	–	निर्मित किया जाता है
कल्पयतु	–	कल्पना कीजिए
विमृशन्ति	–	विचार करते हैं

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत–

पञ्चाशत्	षष्टिः	सप्ततिः	अशीतिः	नवतिः
त्रिपञ्चाशत्	द्वाषष्टिः	चतुस्सप्ततिः	द्व्यशीतिः	त्रिनवतिः
पञ्चपञ्चाशत्	चतुष्षष्टिः	पञ्चसप्ततिः	चतुरशीतिः	पञ्चनवतिः
सप्तपञ्चाशत्	पञ्चषष्टिः	सप्तसप्ततिः	पञ्चाशीतिः	षण्णवतिः
अष्टापञ्चाशत्	नवषष्टिः	अष्टासप्ततिः	नवाशीतिः	शतम्

2. अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत–

	पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा–	भ्रमणाय	चतुर्थी	एकवचनम्
	वस्तूनि	.....	.....
	प्लास्टिकेन	.....	.....
	विकीर्णानि	.....	.....
	मसियष्ट्या	.....	.....
	स्यूतकेषु	.....	.....
	काष्ठपीठे	.....	.....
	पृथिव्याम्	.....	.....

3. एकपदेन उत्तरत–

(क) मसियष्टी-जलकूपी-प्रभृतिनि वस्तूनि केन पदार्थेन निर्मितानि?

(ख) उपवनस्य द्वारे कानि क्षिप्तानि सन्ति?

(ग) मृत्तिकायां किं वस्तु न कदापि विनश्यति?

(घ) अस्माकं प्रयासः कस्य रक्षणे अपेक्षितः?

कः रक्षति
कः रक्षितः

4. **प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–**

(क) चेनम्मायाः सविधे कानि वस्तूनि आसन्?

(ख) पूर्वं प्रायः केन पदार्थेन निर्मितानि वस्तूनि प्राप्यन्ते स्म?

(ग) कानि कानि वस्तूनि पर्यावरणं दूषयन्ति?

(घ) प्लास्टिकस्य मृत्तिकायां लयाभावात् किं भवति?

5. **अधोलिखितानां पदानां लकारं पुरुषं वचनञ्च लिखत–**

	पदानि	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	सन्ति	अस्	लट्लकारः	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
	कुर्मः	.....	.....	.....	.....
	क्रीणाति	.....	.....	.....	.....
	पश्य	.....	.....	.....	.....
	आगच्छ	.....	.....	.....	.....
	प्रचलिष्यति	.....	.....	.....	.....

6. **मञ्जूषातः अङ्कानां कृते पदानि चिनुत–**

चतुःपञ्चाशत्	सप्तषष्टिः	द्वासप्ततिः	षडशीतिः
चनुर्नवतिः	सप्तनवतिः	पञ्चसप्ततिः	अष्टानवतिः

67	.....	86	.....
98	.....	97	.....
54	.....	72	.....
94	.....	75	.....

योग्यता-विस्तारः

संस्कृत में अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप प्राप्त नहीं होते हैं। लेकिन लड़कियों के अकारान्त नाम होते हैं। इनके उदाहरण हैं-परमिन्दर, रोजलिन, कचनार आदि। यहाँ प्रश्न उठता है कि किस रूप में इन नामों को संस्कृत में लिखा जाए। इसलिये इस पाठ में व्यञ्जनान्त (परमिन्दर्) रूप में रखा गया है। संस्कृत में इन्हें व्यञ्जनान्त (परमिन्दर्, रोजलिन्, कचनार्) मानकर रूप चलाये जाने चाहिए।

परियोजना-कार्यम्

चलिए, आगामी अवकाश में एक अभ्यास करते हैं। सुबह जगने से लेकर रात सोने के समय तक बाजार से आनेवाली और प्रतिदिन काम में आने वाली वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखें और इनकी एक सूची बनाएँ। उनके लिए संस्कृत में क्या प्रयोग होता है यह जानने का प्रयास करें। सूची में हर वस्तु के नाम के आगे यह लिखें कि वह किस चीज़ की बनी है। इसमें प्लास्टिक की बनी हुई चीज़ों को छाँटकर एक जगह लिखें और यह आकलन करने का प्रयत्न करें कि प्रतिदिन हम कितनी मात्रा में प्लास्टिक का उपयोग करते हैं।

संस्कृत में वाक्य में पहले 'अपि' लगाने से वाक्य प्रश्न वाचक हो जाता है। जैसे-अपि प्रविशामः? क्या हम भीतर चलें?

धातु-संयुक्त तुमुन् प्रत्यय के अनुस्वार का लोप करके उसके आगे कामा/कामः जोड़ने से अमुक कार्य करना चाहने वाली/चाहने वाला-यह मुहावरेदार प्रयोग होता है। जैसे-गन्तुकामा, वक्तुकामा, कर्त्तुकामः इत्यादि। इस प्रक्रिया के आधार पर नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) राम क्या कहना चाहता है?

(ख) क्रिस्तीना कहाँ जाना चाहती है?

(ग) वह करना क्या चाहता है?

त्रयोदशः पाठः

हिमालयः

[प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास प्रणीत 'कुमारसम्भवम्' नामक महाकाव्य के प्रथम सर्ग से संगृहीत है। इन पद्यों में हिमालय की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन है।]

सन्धिः

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।1।।

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।।2।।

आमेखलं सञ्चरतां घनानां छायामधः सानुगतां निषेव्य।
उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः ।।3।।

कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुं विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम्।
यत्र स्रुतक्षीरतया प्रसूतः सानूनि गन्धः सुरभीकरोति ।।4।।

दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैःशिरसां सतीव ।।5।।

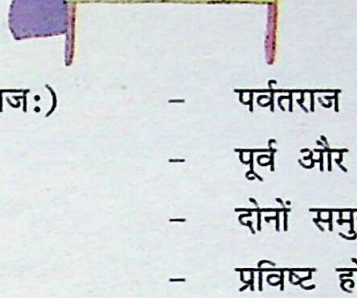

नगाधिराजः (नग+अधिराजः)	–	पर्वतराज
पूर्वापरौ (पूर्व+अपरौ)	–	पूर्व और पश्चिम में स्थित (दोनों)
तोयनिधी	–	दोनों समुद्रों को
वगाह्य	–	प्रविष्ट होकर, धँस कर
मानदण्डः	–	मापक, पैमाना, नापने के लिए प्रयुक्त उपकरण
प्रभवस्य	–	उत्पन्न करने वाले का
सौभाग्यविलोपि	–	सौन्दर्य, महिमा, बड़प्पन को लुप्त करने वाला
सन्निपाते	–	इकट्ठा होने पर
निमज्जति	–	विलीन हो जाता है, नगण्य होता है
अङ्कः	–	कलंक, धब्बा
आमेखलम्	–	मध्य भाग तक
सञ्चरताम्	–	विचरण करते हुए
सानुगताम्	–	चोटियों पर गयी हुई
निषेव्य	–	सेवन करके, सुख पाकर
उद्वेजिता	–	घबराए हुए, परेशान
आश्रयन्ते	–	आश्रय लेते हैं
आतपवन्ति	–	धूप से युक्त पर
कपोलकण्डूः	–	कनपटी की खुजली

करिभिः	–	हाथियों के द्वारा
विनेतुम्	–	दूर करने के लिए
विघट्टितानाम्	–	रगड़े हुओं का
सरलद्रुमाणाम्	–	देवदारु के वृक्षों का
स्रुतक्षीरतया	–	दूध निकलने से
प्रसूतः	–	उत्पन्न
सानूनि	–	पर्वत की चोटियाँ
सुरभीकरोति	–	सुगन्धित कर देता है
गुहासु	–	गुफाओं में
लीनम्	–	छिपे हुए
दिवाभीतम्	–	दिन से डरे हुए, उल्लू
क्षुद्रेऽपि (क्षुद्रे+अपि)	–	अधम या नीच को भी
शरणं प्रपन्ने	–	शरण में आये हुए
ममत्वम्	–	अपनापन
सतीव (सति+इव)	–	मानों होने पर

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकपदेन उत्तराणि लिखत–

(क) पृथिव्याः मानदण्डः कः?

(ख) हिमालयः भारतस्य कस्यां दिशि वर्तते?

(ग) इन्दोः किरणेषु कः निमज्जति?

(घ) कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य रचयिता कः?

(ङ) हिमालयः गुहासु कं रक्षति?

2. **अधोरेखाङ्कितेभ्यः पदेभ्यः प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) हिमालयः उत्तरस्यां दिशि वर्तते।

(ख) पृथिव्याः मानदण्डः हिमालयः अस्ति।

(ग) कुमारसम्भवमहाकाव्यं कालिदासेन विरचितम्।

(घ) अस्मिन् पाठे कविः हिमालयस्य वर्णनं करोति।

3. **अधोलिखितेषु पदेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

अस्त्युत्तरस्याम्	=	.....	+	.....
नगाधिराजः	=	.....	+	.....
पूर्वापरौ	=	.....	+	.....
किरणेष्विव	=	.....	+	.....
यस्यातपवन्ति	=	.....	+	.....

4. **मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा निर्दिष्टस्तम्भेषु लिखत–**

नगाधिराजः	दिशि	इन्दोः	सिद्धाः	करिभिः
किरणैः	द्रुमाणाम्	स्रुतक्षीरतया	क्षुद्रे	छायायाम्
गुहासु	महाकाव्ये	शृङ्गाणि	विघट्टितानाम्	मानदण्डः
प्रभवस्य	यः	घनानाम्	वृष्टिभिः	कालिदासेन

	प्रथमाविभक्तिः	तृतीयाविभक्तिः	षष्ठीविभक्तिः	सप्तमीविभक्तिः
यथा–	यः	करिभिः	इन्दोः	गुहासु
	.....	.....	.....	.....
	.....	.....	.....	.....
	.....	.....	.....	.....
	.....	.....	.....	.....

5. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

पृथिव्याः – .....

हिमालये – .....

गुहासु – .....

इन्दोः – .....

छायायाम् – .....

योग्यता-विस्तारः

- 'मानदण्ड' शब्द मापने के लिये प्रयोग में लायी जाने वाली तराजू के लकड़ी के डण्डे को कहा जाता है। यह शब्द अब आदर्श कसौटी, निकष, पराकाष्ठा, श्रेष्ठता का पैमाना आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

- 'पूर्वापरौ तोयनिधी' के माध्यम से यहाँ क्रमशः बंगाल की खाड़ी तथा अरबसागर की ओर संकेत किया गया है।

- 'सरलद्रुम' देवदारु के पेड़ को कहा जाता है। इसकी छाल बहुत कोमल होती है। घर्षणमात्र से ही इसकी छाल छिल जाती है तथा उससे दूध की धार बहने लगती है।

- हिमालय की महिमा का वर्णन दूसरे ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है। तुलनीय-

कैलासो हिमवांश्चैव दक्षिणे वर्षपर्वतौ।
पूर्वपश्चिमगावेतावर्णवान्तरुपस्थितौ॥ (*ब्रह्माण्डपुराणम्*)

❖ कालिदास द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के विरुद्ध में एक यह भी कथन पाया जाता है-

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोरिति यो बभाषे।
न तेन दृष्टं कविना समस्तं दारिद्र्यमेकं गुणकोटिहारि॥

❖ सूक्ति का अर्थ है सुन्दर कथन। कालिदास के काव्य में बहुत ऐसी सूक्तियाँ हैं जिनसे मनुष्य को बहुत सी सीख मिलती है। नीचे दी गयी कुछ अन्य सूक्तियों का अध्ययन करें।

❖ कालिदास ने मेघदूत में रामगिरि पर्वत को ले कर लिखा है-

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय।
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥

कालिदास की अन्य प्रसिद्ध सूक्तियाँ

- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
- न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।
- प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।
- पुराणमित्येव न साधु सर्वम्।
- रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

परियोजना-कार्यम्

* इस पाठ में सूक्तियाँ खोजें।
* अन्य भाषाओं में प्राप्त हिमालय वर्णन को पढ़ें और उसकी सूची बनायें।

चतुर्दशः पाठः

आर्यभटः

[भारतवर्ष की अमूल्य निधि है ज्ञान-विज्ञान की सुदीर्घ परम्परा। इस परम्परा को सम्पोषित किया प्रबुद्ध मनीषियों ने। इन्हीं मनीषियों में अग्रगण्य थे आर्यभट। दशमलव पद्धति आदि के प्रारम्भिक प्रयोक्ता आर्यभट ने गणित को नयी दिशा दी। इन्हें एवं इनके प्रवर्तित सिद्धान्तों को तत्कालीन रूढिवादियों का विरोध झेलना पड़ा। वस्तुतः गणित को विज्ञान बनाने वाले तथा गणितीय गणना पद्धति के द्वारा आकाशीय पिण्डों की गति का प्रवर्तन करने वाले ये प्रथम आचार्य थे। आचार्य आर्यभट के इसी वैदुष्य का उद्घाटन प्रस्तुत पाठ में है।]

पूर्वदिशायाम् उदेति सूर्यः पश्चिमदिशायां च अस्तं गच्छति इति दृश्यते हि लोके। परं न अनेन अवबोध्यमस्ति यत्सूर्यो गतिशील इति। सूर्योऽचलः पृथिवी च चला या स्वकीये अक्षे घूर्णति इति साम्प्रतं सुस्थापितः सिद्धान्तः। सिद्धान्तोऽयं प्राथम्येन येन प्रवर्तितः, स आसीत् महान् गणितज्ञः ज्योतिर्विच्च आर्यभटः। पृथिवी स्थिरा वर्तते इति परम्परया प्रचलिता रूढिः तेन प्रत्यादिष्टा। तेन उदाहृतं यद् गतिशीलायां नौकायाम् उपविष्टः मानवः नौकां स्थिरामनुभवति, अन्यान् च पदार्थान् गतिशीलान् अवगच्छति। एवमेव गतिशीलायां पृथिव्याम् अवस्थितः मानवः पृथिवीं स्थिरामनुभवति सूर्यादिग्रहान् च गतिशीलान् वेत्ति।

476 तमे ख्रिस्ताब्दे (षट्सप्तत्यधिकचतुःशततमे वर्षे) आर्यभटः जन्म लब्धवानिति तेनैव विरचिते 'आर्यभटीयम्' इत्यस्मिन् ग्रन्थे उल्लिखितम्। ग्रन्थोऽयं तेन त्रयोविंशतितमे

वयसि विरचितः। ऐतिहासिकस्रोतोभिः ज्ञायते यत् पाटलिपुत्रं निकषा आर्यभटस्य वेधशाला आसीत्। अनेन इदम् अनुमीयते यत् तस्य कर्मभूमिः पाटलिपुत्रमेव आसीत्।

आर्यभटस्य योगदानं गणितज्योतिषा सम्बद्धं वर्तते यत्र संख्यानाम् आकलनं महत्त्वम् आदधाति। आर्यभटः फलितज्योतिषशास्त्रे न विश्वसिति स्म। गाणितीयपद्धत्या कृतम् आकलनमाधृत्य एव तेन प्रतिपादितं यद् ग्रहणे राहु-केतुनामकौ दानवौ नास्ति कारणम्। तत्र तु सूर्यचन्द्रपृथिवी इति त्रीणि एव कारणानि। सूर्यं परितः भ्रमन्त्याः पृथिव्याः, चन्द्रस्य परिक्रमापथेन संयोगाद् ग्रहणं भवति। यदा पृथिव्याः छायापातेन चन्द्रस्य प्रकाशः अवरुध्यते तदा चन्द्रग्रहणं भवति। तथैव पृथ्वीसूर्ययोः मध्ये समागतस्य चन्द्रस्य छायापातेन सूर्यग्रहणं दृश्यते।

समाजे नूतनानां विचाराणां स्वीकारे प्रायः सामान्यजनाः काठिन्यमनुभवन्ति। भारतीयज्योतिःशास्त्रे तथैव आर्यभटस्यापि विरोधः अभवत्। तस्य सिद्धान्ताः उपेक्षिताः। स पण्डितम्मन्यानाम् उपहासपात्रं जातः। पुनरपि तस्य दृष्टिः कालातिगामिनी दृष्टा। आधुनिकैः वैज्ञानिकैः तस्मिन्, तस्य च सिद्धान्ते समादरः प्रकटितः। अस्मादेव कारणाद् अस्माकं प्रथमोपग्रहस्य नाम आर्यभट इति कृतम्।

वस्तुतः भारतीयायाः गणितपरम्परायाः अथ च विज्ञानपरम्परायाः असौ एकः शिखरपुरुषः आसीत्।

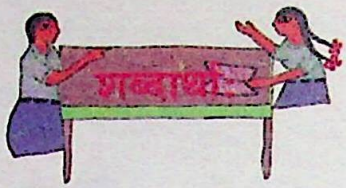

लोके	–	संसार में
अवबोध्यम्	–	समझने योग्य, जानने योग्य, जानना चाहिए
अचलः	–	स्थिर, गतिहीन
चला	–	अस्थिर, गतिशील
स्वकीये	–	अपने
अक्षे	–	धुरी पर
घूर्णति	–	घूमती है
सुस्थापितः	–	भली-भाँति स्थापित
प्राथम्येन	–	सर्वप्रथम
ज्योतिर्विद्	–	ज्योतिषी
रूढिः	–	प्रचलित प्रथा, रिवाज
प्रत्यादिष्टा (प्रति+आदिष्टा)	–	खण्डन किया
खिस्ताब्दे (खिस्त+अब्दे)	–	ईस्वी में
षट्सप्ततिः	–	छिहत्तर
वयसि	–	आयु में, अवस्था में, उम्र में
निकषा	–	निकट
वेधशाला	–	ग्रह, नक्षत्रों को जानने की प्रयोगशाला
आकलनम्	–	गणना

आदधाति	–	रखता है
भ्रमन्त्याः	–	घूमने वाली की, घूमती हुई की
छायापातेन	–	छाया पड़ने से
अवरुध्यते	–	रुक जाता है
अपरत्र	–	दूसरी ओर
अवस्थितः	–	स्थित
विश्वसिति स्म	–	विश्वास करता था
प्रतिरोधस्य	–	रोकने का
पण्डितम्मन्यानाम्	–	स्वयं को भारी विद्वान् मानने वालों का
कालातिगामिनी	–	समय को लाँघने वाली

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) सूर्यः कस्यां दिशायाम् उदेति?

(ख) आर्यभटस्य वेधशाला कुत्र आसीत्?

(ग) महान् गणितज्ञः ज्योतिर्विच्च कः अस्ति?

(घ) आर्यभटेन कः ग्रन्थः रचितः?

(ङ) अस्माकं प्रथमोपग्रहस्य नाम किम् अस्ति?

2. **सन्धिविच्छेदं कुरुत-**

ग्रन्थोऽयम् – ..... + ...

सूर्याचलः – ..... + ...

तथैव – ..... + ...

कालातिगामिनी – ..... + ...

प्रथमोपग्रहस्य – ..... + ...

3. अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि लिखत–

उदयः .....

अचलः .....

अन्धकारः .....

स्थिरः .....

समादरः .....

4. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत–

साम्प्रतम् – .....

निकषा – .....

परितः – .....

उपविष्टः – .....

कर्मभूमिः – .....

वैज्ञानिकः – .....

5. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

नौकाम्	पृथिवी	तदा	चला	अस्तं

(क) सूर्यः पूर्वदिशायाम् उदेति पश्चिमदिशि च ..... गच्छति।

(ख) सूर्यः अचलः पृथिवी च .....।

(ग) ..... स्वकीये अक्षे घूर्णति।

(घ) यदा पृथिव्याः छायापातेन चन्द्रस्य प्रकाशः अवरुध्यते ..... चन्द्रग्रहणं भवति।

(ङ) नौकायाम् उपविष्टः मानवः ..... स्थिरामनुभवति।

6. उदाहरणानुसारं पदपरिचयं ददत-

	पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा -	चन्द्रस्य	पुँल्लिङ्गः	षष्ठी	एकवचनम्
	वेधशालायाम्	.....	.....	.....
	पृथिवी	.....	.....	.....
	परम्परया	.....	.....	.....
	त्रीणि	.....	.....	.....
	छायापातेन	.....	.....	.....

7. 'मति' शब्दस्य रूपाणि पूरयत-

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	.....	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	.....
चतुर्थी	.....	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	.....	.....
षष्ठी	.....	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधनम्	.....!	हे मती!	हे मतयः!

योग्यता-विस्तारः

आर्यभट को अश्मकाचार्य नाम से भी जाना जाता है। यही कारण है कि इनके जन्मस्थान के विषय में विवाद है। कोई इन्हें पाटलिपुत्र का कहते हैं तो कोई महाराष्ट्र का।

आर्यभट ने दशमलव पद्धति का प्रयोग करते हुए π (पाई) का मान निर्धारित किया। उन्होंने दशमलव के बाद के चार अंकों तक π के मान को निकाला। उनकी दृष्टि में π का मान है 3.1416 । आधुनिक गणित में π का मान, दशमलव के बाद सात अंकों तक जाना जा सका है, तदनुसार π = 3.1416926 ।

भारतीयज्योतिषशास्त्र–वैदिक युग में यज्ञ के काल अर्थात् शुभ मुहूर्त के ज्ञान के लिए ज्योतिषशास्त्र का उद्भव हुआ। कालान्तर में इसके अन्तर्गत ग्रहों का संचार, वर्ष, मास, पक्ष, वार, तिथि, घंटा आदि पर गहन विचार किया जाने लगा। लगध, आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, बालगंगाधर तिलक, रामानुजन् आदि हमारे देश के प्रमुख ज्योतिषशास्त्री हैं। आर्यभटीयम्, सौरसिद्धान्तः, बृहत्संहिता, लीलावती, पञ्चसिद्धान्तिका आदि ज्योतिष के प्रमुख संस्कृत ग्रन्थ हैं।

आर्यभटीयम्–आर्यभट ने 499 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ 20 आर्याछन्दों में निबद्ध है। इसमें ग्रहों की गणना के लिए कलि संवत् (499 ई. में 3600 कलि संवत्) को निश्चित किया गया है।

गणितज्योतिष–संख्या के द्वारा जहाँ काल की गणना हो, वह गणितज्योतिष है। ज्योतिषशास्त्र की तीन विधाओं यथा–सिद्धान्त, फलित एवं गणित में यह सर्वाधिक प्रमुख है।

फलितज्योतिष–इसके अन्तर्गत ग्रह नक्षत्रों आदि की स्थिति के आधार पर भाग्य, कर्म आदि का विवेचन किया जाता है।

वेधशाला–ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, स्थिति की जानकारी जहाँ गणना तथा यान्त्रिक विधि के आधार पर ली जाये वह वेधशाला है। यथा–जन्तर-मन्तर।

परियोजना-कार्यम्

* योग्यता विस्तार में उल्लिखित विद्वानों की कृतियों के नाम का सङ्कलन करें।
* योग्यता विस्तार में उद्धृत पुस्तकों के लेखक का नाम बताएँ।
* आर्यभट के अतिरिक्त कुछ अन्य गणितज्ञों के नाम तथा उनके कार्यों की सूची तैयार करें।

पञ्चदशः पाठः

प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्रायः विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्?
को हन्ति करिणां कुलम्?
किं कुर्यात् कातरो युद्धे?
मृगात् सिंहः पलायते ।।1।।

सीमन्तिनीषु का शान्ता?
राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः?
विद्वद्भिः का सदा वन्द्या?
अत्रैवोक्तं न बुध्यते ।।2।।

कं सञ्जघान कृष्णः?
का शीतलवाहिनी गङ्गा?
के दारपोषणरताः?
कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ।।3।।

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः ।।4।।

भोजनान्ते च किं पेयम्?
जयन्तः कस्य वै सुतः?
कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्?
तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ।।5।।

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्केताः

प्रथमा प्रहेलिका	-	अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां त्रिभिः पदैः उत्तरं दत्तम्।
द्वितीया प्रहेलिका	-	प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते।
तृतीया प्रहेलिका	-	प्रत्येकं चरणे प्रथमद्वितीययोः प्रथमत्रयाणां वा वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते।
चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम्	-	नारिकेलफलम्।
पञ्चमप्रहेलिकायाः उत्तरम्	-	प्रथम-प्रहेलिकावत्।

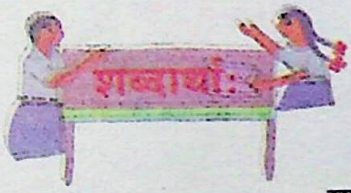

हन्ति	-	मारता/मारती है
कातरः	-	कमजोर
सीमन्तिनीषु	-	नारियों में
कोऽभूत् (कः+अभूत्)	-	कौन हुआ
सञ्जघान	-	मारा
कंसञ्जघान (कंसं+जघान)	-	कंस को मारा
शीतलवाहिनी	-	ठंडी धारा वाली
काशीतलवाहिनी	-	काशी की भूमि पर बहने वाली

दारपोषणरताः	–	पत्नी के पोषण में संलग्न
केदारपोषणरताः	–	खेत के कार्य में संलग्न
कंबलवन्तम्	–	वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है
वृक्षाग्रवासी (वृक्ष+अग्रवासी)	–	पेड़ के ऊपर रहने वाला
पक्षिराजः	–	पक्षियों का राजा (गरुड़)
त्रिनेत्रधारी	–	तीन नेत्रों वाला (शिव)
शूलपाणिः	–	जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर)
त्वग्	–	त्वचा, छाल
बिभ्रन्	–	धारण करता हुआ
विष्णुपदम्	–	स्वर्ग, मोक्ष
तक्रम्	–	छाछ, मठा
शक्रस्य	–	इन्द्र का

अभ्यासः

1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) सीमन्तिनीषु का ..... राजा ..... गुणोत्तमः।

(ख) कं सञ्जघान ..... का ..... गङ्गा?

(ग) के ..... कं ..... न बाधते शीतम्।।

(घ) वृक्षाग्रवासी न च .... न च शूलपाणिः।

2. श्लोकांशान् योजयत-

क	ख
किं कुर्यात् कातरो युद्धे	अत्रैवोक्तं न बुध्यते।
विद्वद्भिः का सदा वन्द्या	तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।
कं सञ्जघान कृष्णः	मृगात् सिंहः पलायते।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं	काशीतलवाहिनी गङ्गा।

3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं न इति लिखत-

यथा- सिंहः करिणां कुलं हन्ति। [आम्]

(क) कातरो युद्धे युद्ध्यते। [ ]

(ख) कस्तूरी मृगात् जायते। [ ]

(ग) मृगात् सिंहः पलायते। [ ]

(घ) कंसः जघान कृष्णम्। [ ]

(ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्। [ ]

(च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्रः। [ ]

4. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनञ्च लिखत-

पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा-करिणाम्	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
कस्तूरी	.....	.....	.....
युद्धे	.....	.....	.....
सीमन्तिनीषु	.....	.....	.....
बलवन्तम्	.....	.....	.....
शूलपाणिः	.....	.....	.....
शक्रस्य	.....	.....	.....

5. कोष्ठकान्तर्गतानां पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूरयत-

एकः काकः ..... (आकाश) डयमानः आसीत्। तृषार्तः सः ..... (जल) अन्वेषणं करोति। तदा सः ..... (घट) अल्पं ..... (जल) पश्यति। सः ..... (उपल) आनीय ..... (घट) पातयति। जलं ..... (घट) उपरि आगच्छति। ..... (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यति।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं। उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो उत्तर देखें।

(क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।
महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः।
स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि
सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥

(ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद॥

(ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

उत्तर-(क) वृषभः, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्

परिशिष्टम्

सन्धिः

पूर्वपदस्य अन्तिमवर्णेन समम् उत्तरपदस्य पूर्ववर्णस्य मेलनेन यत्परिवर्तनं भवति तत्सन्धिः इति।

यथा- विद्या + आलयः
= विद्य् आ + आ लयः
= विद्यालयः

एवमेव यदि + अपि = यद्यपि कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः

सामान्यतः सन्धिः त्रिविधः, तद्यथा-

(क) स्वरसन्धिः अच्सन्धिः वा
(ख) व्यञ्जनसन्धिः हल्सन्धिः वा
(ग) विसर्गसन्धिः

(क) **स्वरसन्धिः** - स्वरवर्णेन सह स्वरवर्णस्य मेलनं स्वर-सन्धिः कथ्यते। संस्कृतभाषायां स्वीकृताः स्वरवर्णाः इमे सन्ति-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ, लॄ, ए, ऐ, ओ, औ। स्वरसन्धौ एतेषां परस्परमेलनं भवति। अत्र केचिद् विशिष्टाः सन्धयः उल्लेखनीयाः-

(*i*) **दीर्घसन्धिः** - अ, इ, उ, ऋ ह्रस्वेभ्यो दीर्घेभ्यो वेति वर्णेभ्यः परम् अ, इ, उ, ऋ वेति स्वरः दीर्घाः वा वर्णाः भवन्ति चेत्, तयोः मेलनेन दीर्घः भवति। (सूत्रम्-अकः सवर्णे दीर्घः)

उदाहरणानि- मुर + अरिः = मुरारिः
पाठ + आरम्भः = पाठारम्भः
दक्षिण + अयनम् = दक्षिणायनम्
स्वराज्य + आन्दोलनम् = स्वराज्यान्दोलनम्
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः

मुनि + ईश्वरः = मुनीश्वरः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

मही + ईश्वरः = महीश्वरः

भानु + उदयः = भानूदयः

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

वधू + उदयः = वधूदयः

पितृ + ऋणम् = पितृणम्

सामान्य-प्रक्रिया			
अ + अ = आ	इ + इ = ई	उ + उ = ऊ	ऋ + ऋ = ॠ
अ + आ = आ	इ + ई = ई	उ + ऊ = ऊ	ऌ + ऌ = ॡ
आ + अ = आ	ई + इ = ई	ऊ + उ = ऊ	
आ + आ = आ	ई + ई = ई	ऊ + ऊ = ऊ	

(*ii*) **यण्सन्धिः** – इ, उ, ऋ, ऌ वेति वर्णस्य पश्चात् भिन्नस्वरवर्णः भवति चेत् इ, उ, ऋ, ऌ इत्येषां स्थाने क्रमशः य्, व्, र्, ल् आदेशः भवति। (सूत्रम्-इको यणचि)

उदाहरणानि–

यदि + अपि = यद्यपि

मधु + अरि = मध्वरिः

वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्

पितृ + आदेशः = पित्रादशः

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

सामान्य-प्रक्रिया

इ/ई + अ, आ, उ, ऊ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ = य्

उ/ऊ + अ, आ, इ, ई, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ = व्

ऋ/ॠ + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ = र्

ऌ/ॡ + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ = ल्

(*iii*) **गुणसन्धिः** – अ, आ इत्यनयोः पश्चात् इ, उ, ऋ, ऌ वेति वर्णः आगच्छति चेत्, क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् वा भवति। (सूत्रम्-आद्गुणः)

उदाहरणानि-

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः

देव + ईशः = देवेशः

पर + उपकारः = परोपकारः

एक + ऊनः = एकोनः

महा + ऊर्मिः = महोर्मिः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

तव + ऌकारः = तवल्कारः

सामान्य-प्रक्रिया

अ/आ + इ, ई = ए

अ/आ + उ, ऊ = ओ

अ/आ + ऋ = अर्

अ/आ + ऌ = अल्

(*iv*) **वृद्धिसन्धिः** – अ/आ इत्यनयोः पश्चात् ए/ऐ, ओ/औ वेति वर्णः आगच्छति चेत्, क्रमशः ऐ, औ वा भवति। (सूत्रम्-वृद्धिरेचि)

उदाहरणानि-

एक + एकम् = एकैकम्

देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः

महा + ओषधिः = महौषधिः

सामान्य-प्रक्रिया

अ/आ + ए, ऐ = ऐ

अ/आ + ओ, औ = औ

(*v*) **अयादिसन्धिः** – ए, ऐ, ओ, औ वेति वर्णस्य पश्चात् कोऽपि स्वरवर्णः आगच्छति चेत्, तत्स्थाने क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् वा आदेशः भवति। (सूत्रम्–एचोऽयवायावः)

उदाहरणानि–

ने + अनम् = नयनम्

गै + अकः = गायकः

पो + अनम् = पवनम्

पौ + अकः = पावकः

सामान्य-प्रक्रिया		
ए + स्वरवर्णाः	=	अय्
ऐ + स्वरवर्णाः	=	आय्
ओ + स्वरवर्णाः	=	अव्
औ + स्वरवर्णाः	=	आव्

कारकम्

वाक्ये क्रियायाः सद्यः अन्वयः येन पदेन शब्देन वा सह भवति तत्पदं कारकं भवति। कारकाणाम् अर्थं प्रकाशयितुं येषां प्रत्ययानां संयोजनं शब्दैः सह भवति ते (प्रत्ययाः) कारकविभक्तयः भवन्ति।

सामान्यतः विभक्तिः द्विविधा–

(*i*) कारकविभक्तिः (*ii*) उपपदविभक्तिः

कारकविभक्तिः – कारकद्वारा प्रयुक्तविभक्तिः कारकविभक्तिः भवति। यथा–बालकः विद्यालयं गच्छति। अत्र बालकः इत्यत्र कर्तृकारकमिति प्रथमा विभक्तिः। विद्यालयम् इत्यत्र कर्मकारकमिति द्वितीया विभक्तिः।

उपपदविभक्तिः – पदम् आश्रित्य या विभक्तिः सा उपपद-विभक्तिः। यथा–गुरवे नमः। अत्र 'नमः' इति पदस्य प्रयोगेण चतुर्थी विभक्तिः।

अभितः – ग्रामम् अभितः पर्वताः सन्ति।

परितः – ग्रामं परितः उद्यानम् अस्ति।

उभयतः - विद्यालयम् उभयतः पुष्पवाटिका।

सर्वतः - पुष्पवाटिकां सर्वतः वृक्षाः सन्ति।

सह - शशाङ्केण सह रोहिणी गृहं गतवती।

साकं - मया साकं त्वं गच्छसि।

समम् - त्वया समम् अहं गच्छामि।

सार्धं - प्रधानमन्त्रिणा सार्धं मन्त्रिणः अपि गतवन्तः।

अलम् - अलम् विवादेन। अलं श्रमेण। रामः रावणाय अलम्।

नमः - गुरवे नमः।

स्वाहा - अग्नये स्वाहा।

स्वधा - पितृभ्यः स्वधा।

वषट् - देवतायै वषट्।

उपसर्गः

धातोः पूर्वम् उपसर्गान् योजयित्वा वयं नूतनक्रियापदानां निर्माणं कुर्मः। उपसर्गाः साधारणतः द्वाविंशतिः (22) संख्यकाः सन्ति, तद्यथा-प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, निस्, दुर्, दुस्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप। उपसर्गयोगेन धात्वर्थः क्वचित् परिवर्तते। अतः कथ्यते-

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
विहारहारसंहारप्रहारपरिहारवत्॥

यथा- वि + हृ = विहरति

सम् + हृ = संहरति

उप + हृ = उपहरति

परि + हृ = परिहरति

प्रत्ययः

विभक्तिरहितस्य मूलशब्दस्य अन्ते, अर्थयुतं शब्दं प्रतिपादयितुं यः शब्दः वर्णो वा प्रयुज्यते सः प्रत्ययः कथ्यते। विभक्तिरहितः मूलशब्दः संस्कृतव्याकरणे प्रकृतिः उच्यते। प्रकृतिरियं द्विविधा, तद्यथा-धातुः प्रातिपदिकञ्च।

एवं धातोः प्रातिपदिकात् च अनन्तरं यः वर्णः प्रयुज्यते सः प्रत्ययः भवति। यथा-'रामः' इति शब्दे 'राम' प्रातिपदिकः अस्ति, विसर्गः (सु) च प्रत्ययो वर्तते। तथैव 'पठित्वा' इति शब्दे पठ् इति धातुः वर्तते क्त्वा च प्रत्ययः इति।

प्रत्ययाः पञ्चविधाः भवन्ति, तद्यथा-विभक्तिः, कृत्, तद्धितः, स्त्रीप्रत्ययः, धात्ववयवश्च। अत्र इमे प्रत्ययाः अपि अवबोधनीयाः।

(क) **विभक्तिः** - धातूनाम् अनन्तरं 'ति, तः, न्ति'-प्रभृतयः प्रत्ययाः प्रातिपदिकानां च अनन्तरं सु-औ-जस्-प्रभृतयः प्रत्ययाः विभक्ति-प्रत्ययाः भवन्ति।

यथा- राम + सु = रामः (प्रातिपदिकेन निष्पन्नः)
गम् + ति = गच्छति (धातुभिनिष्पन्नः)
पठ् + न्ति = पठन्ति (धातुभिनिष्पन्नः)

(ख) **कृत्** - धातोः पश्चात् प्रयुक्ताः प्रत्ययाः कृत्प्रत्ययाः भवन्ति।

यथा- पठ् + ल्युट् = पठनम्

(ग) **तद्धितः** - संज्ञायाः सर्वनाम्नश्च पश्चात् प्रयुक्ताः प्रत्ययाः तद्धिताः भवन्ति।

यथा- शिव + अण् = शैवः।

(घ) **स्त्रीप्रत्ययः** - पुंलिङ्गशब्दान् स्त्रीलिङ्गेषु परिवर्तितुं ये प्रत्ययाः प्रयोगे व्यवह्रियन्ते ते स्त्रीप्रत्ययाः सन्ति।

यथा- चतुर + टाप् = चतुरा
दातृ + ङीप् = दात्री

(ङ) **धात्ववयवः** – धातोः विभक्तेश्च मध्ये सन्-शप्-णिच्-प्रभृतयः प्रत्ययाः धात्ववयवाः भवन्ति।

यथा– पठ् + णिच् + तिप् = पाठयति

आङ्लभाषायां प्रत्ययः इति शब्दस्य कृते Suffix इति शब्दो वर्तते। केचन प्रमुखाः व्यावहारिकाश्च प्रत्ययाः सन्ति – क्त्वा, तुमुन्, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, क्त, क्तवतु, घञ्, टाप्, ल्युट्, णिच्, ल्यप्, इत्यादयः।

कानिचन उदाहरणानि

क्त्वा – गम् + क्त्वा = गत्वा = जाकर
पठ् + क्त्वा = पठित्वा = पढ़कर
हस् + क्त्वा = हसित्वा = हँसकर

> अहं पुस्तकं पठित्वा गृहं गमिष्यामि।

ल्यप् – परि + त्यज् + ल्यप् = परित्यज्य = छोड़कर
वि + हस् = ल्यप् = विहस्य = हँसकर
उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य = समीप जाकर

> श्यामः गृहं परित्यज्य वनं गतवान्।

तुमुन् – नी + तुमुन् = नेतुम् = लाने के लिये
गम् + तुमुन् = गन्तुम् = जाने के लिये
पठ् + तुमुन् = पठितुम् = पढ़ने के लिये
चल् + तुमुन् = चलितुम् = चलने के लिये

> लता पुस्तकं पठितुं पुस्तकालयं गच्छति।
>
> अहं फलं नेतुम् आपणं गमिष्यामि।

शब्दरूपाणि

सर्वनाम-शब्दः

अस्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत्

पुँल्लिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

इदम्

पुँल्लिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

विशेषः - सर्वनामशब्दानां सम्बोधने रूपाणि न भवन्ति।

ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्गः

मातृ (माता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन!	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

स्वसृ (बहन)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन!	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

नकारान्त-पुँल्लिङ्गः

राजन् (राजा)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन!	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

धातु-रूपाणि

खाद् (खाना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यमपुरुषः	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तमपुरुषः	खादामि	खादावः	खादामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तमपुरुषः	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यमपुरुषः	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तमपुरुषः	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यमपुरुषः	खाद	खादतम्	खादत
उत्तमपुरुषः	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यमपुरुषः	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तमपुरुषः	खादेयम्	खादेव	खादेम

एवमेव धाव्, खेल्, गम् (गच्छ), पठ्, रक्ष्, भ्रम्, पा (पिब्), हस्, मिल्, क्रीड्,-इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

इष् (इच्छा करना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तमपुरुषः	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तमपुरुषः	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यमपुरुषः	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तमपुरुषः	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तमपुरुषः	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तमपुरुषः	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

संख्यावाचकाः शब्दाः (५१ तः १००)

५१	एकपञ्चाशत्	६२	द्वाषष्टिः/द्विषष्टिः
५२	द्वापञ्चाशत्/द्विपञ्चाशत्	६३	त्रयष्षष्टिः/त्रिषष्टिः
५३	त्रयःपञ्चाशत्/त्रिपञ्चाशत्	६४	चतुष्षष्टिः
५४	चतुःपञ्चाशत्	६५	पञ्चषष्टिः
५५	पञ्चपञ्चाशत्	६६	षट्षष्टिः
५६	षट्पञ्चाशत्	६७	सप्तषष्टिः
५७	सप्तपञ्चाशत्	६८	अष्टाषष्टिः/अष्टषष्टिः
५८	अष्टापञ्चाशत्/अष्टपञ्चाशत्	६९	नवषष्टिः/एकोनसप्ततिः
५९	नवपञ्चाशत्/एकोनषष्टिः	७०	सप्ततिः
६०	षष्टिः	७१	एकसप्ततिः
६१	एकषष्टिः	७२	द्वासप्ततिः/द्विसप्ततिः

७३ त्रिसप्तति:/त्रयस्सप्तति:

७४ चतुस्सप्तति:

७५ पञ्चसप्तति:

७६ षट्सप्तति:

७७ सप्तसप्तति:

७८ अष्टासप्तति:/अष्टसप्तति:

७९ नवसप्तति:/एकोनाशीति:

८० अशीति:

८१ एकाशीति:

८२ द्व्यशीति:

८३ त्र्यशीति:

८४ चतुरशीति:

८५ पञ्चाशीति:

८६ षडशीति:

८७ सप्ताशीति:

८८ अष्टाशीति:

८९ नवाशीति:/एकोननवति:

९० नवति:

९१ एकनवति:

९२ द्वानवति:/द्विनवति:

९३ त्रयोनवति:/त्रिनवति:

९४ चतुर्नवति:

९५ पञ्चनवति:

९६ षण्णवति:

९७ सप्तनवति:

९८ अष्टानवति:/अष्टनवति:

९९ नवनवति:/एकोनशतम्

१०० शतम्